रजिस्ट्री सं० डी-222 REGISTERED No. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 6] नई दिल्ली, शनिवार, फरवरी 10, 1973 (माघ 21, 1894)
No. 6] NEW DELHI, SATURDAY, FEBRUARY 10, 1973 (MAGHA 21, 1894)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

नोटिस
(NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 15 फरवरी 1972 तक प्रकाशित किये गये हैं :—
The undermentioned *Gazette of India Extraordinary* were published up to the 15th February 1972 :—

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
1	2	3	4

—शून्य—
—Nil—

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazette Extraordinary* mentioned above will be supplied on indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach tee Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	135
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	183
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	159
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्ट	—
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	85
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं	283
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	25
भाग III—खंड 1—महालेखा परीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	197
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	47
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	7
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल है	379
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें	25
पूरक संख्या 6—	
3 फरवरी, 1973 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट	205
13 जनवरी 1973 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु सम्बन्धी आकड़े	215

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	135
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	183
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolution issued by the Ministry of Defence	—
PATR I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	159
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB.-SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	85
PART II—SECTION 3.—SUB.SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	283
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence	25
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	197
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta	47
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	7
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	379
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	25
SUPPLEMENT NO. 6	
Weekly Epidemiological Reports for week ending 3rd February, 1973	205
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week ending 13th January 1973	215

भाग I—खण्ड 1

(PART I—SECTION 1)

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 27 जनवरी 1973

सं० 9-प्रेज०/73—राष्ट्रपति विभिन्न पदकों एवं अलंकरणों को पहनने के लिए निम्नलिखित पूर्वताक्रम निश्चित करते हैं। राष्ट्रपति सचिवालय की अधिसूचना सं० 35-प्रेज०/70, दिनांक 3 जुलाई 1970 एतद् द्वारा रद्द की जाती है।

1. भारत रत्न
2. परम वीर चक्र
3. अशोक चक्र
4. तदम् विभूषण
5. तद्म भूषण
6. परम विशिष्ट सेवा मैडल
7. महावीर चक्र
8. कीर्ति चक्र
9. पद्म श्री
10. सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक
11. अति विशिष्ट सेवा मैडल
12. वीर चक्र
13. शौर्य चक्र
14. वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्नि शमन सेवा पदक
15. सेना/नौसेना/वायु सेना मैडल
16. विशिष्ट सेवा मैडल
17. वीरता के लिए पुलिस पदक
18. उत्तम जीवन रक्षा पदक
19. आहत मैडल
20. सामान्य सेवा मैडल, 1947
21. समर सेवा स्टार, 1965
22. पूर्वी स्टार
23. पश्चिमी स्टार
24. रक्षा मैडल, 1965
25. संग्राम मैडल
26. सैन्य सेवा मैडल
27. पुलिस (स्पैशल ड्यूटी) पदक, 1962
28. विदेश सेवा मैडल
29. विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्नि शमन सेवा पदक
30. सराहनीय सेवा पदक
31. दीर्घकालीन सेवा व उत्तम आचरण मैडल
32. सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक
33. जीवन रक्षा पदक
34. प्रादेशिक सेना अलंकरण
35. प्रादेशिक सेना मैडल
36. भारतीय स्वतंत्रता मैडल, 1947
37. स्वतंत्रता मैडल, 1950
38. पच्चीसवीं स्वतंत्रता जयन्ती मैडल
39. विंश वर्ष दीर्घ सेवा मैडल
40. नव वर्ष दीर्घ सेवा मैडल
41. राष्ट्रमंडलीय पुरस्कार
42. अन्य पुरस्कार

सं० 10-प्रेज०/73—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की सक्रियाओं में उनके असाधारण कर्तव्यपरायणता अथवा साहस के उपलक्ष्य में उनको "नौसेना मैडल/नेवी मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. कैप्टेन विट्ठल अमृतराव धारेश्वर (एक्स०), भारतीय नौसेना।

कैप्टेन विट्ठल अमृतराव धारेश्वर दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के साथ हुए संघर्ष के दौरान दक्षिणी अरब सागर में भेजे गए पोतों में से एक पोत के कमान अफसर थे। संक्रियाओं की सम्पूर्ण अवधि के दौरान उन्होंने अपने पोत की प्रहार दक्षता के उच्चतम स्तर को बनाए रखा। उनका पोत युद्ध में आदि से अन्त तक समुद्र में रहा और उसने वर्जित माल के लिए समुद्र में सभी पोतों को प्रभावकारी रूप से जांच पड़ताल की। ऐसे सभी अवसरों पर, वे पोत पर उपस्थित समस्त कार्मिकों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहे।

आद्योपान्त कैप्टेन विट्ठल अमृतराव धारेश्वर ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. कैप्टेन इन्दर मोहन नारंग, जहाजरानी।

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष के दौरान, कैप्टेन इन्दर मोहन नारंग भारतीय जहाजरानी निगम के विशव विजय नामक जलयान के संचालक थे। उनके जलयान को सैन्य दल को ले जाने तथा कोक्स बाजार से परे उसकी तट पर अवतरण संक्रिया के लिए अधिग्रहीत किया गया था। उन्होंने यह बहुत अच्छी तरह जानते हुए भी अपने जहाज का संचालन किया कि शत्रु की पनडुबियां समुद्र के उस भाग में मौजूद हैं जिसे उन्हें पार करना है। इन प्राप्त सूचनाओं के अनुसार कि शत्रु के दो सैबर जेट अब भी संक्रियारत थे, उन्हें इस बात का भी भान था कि उनके पोत पर हवाई हमला भी हो सकता है। इन सभी खतरों की परवाह न करते हुए वे पोत को अवतारण स्थल की ओर ले गए जो तटवर्ती तोपों की मार में आता था। उनके द्वारा उस पोत में अनेकों अफसरों और जवानों के आवास के लिए पारियों की व्यवस्था करना, जो मूल रूप से माल ले जाने के लिए था, अत्यधिक प्रशंसनीय था।

इस कार्यवाही में कैप्टेन इन्दर मोहन नारंग ने साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

3. कमाण्डर राजेन्द्र प्रसाद भल्ला (एक्स०),
भारतीय नौसेना।

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमाण्डर राजेन्द्र प्रसाद भल्ला अवतरण संक्रियाओं का संचालन करने के लिए पूर्वी बेड़े में उस समय सम्मिलित हुए जब थल-सेना को बंगला देश में काक्स बाजार के तटों पर उतरने का आदेश दिया गया था। वे सैन्य-दल के साथ रवाना हुए और संक्रिया स्थल पर अवतरण के लिए निश्चित समय के कुछ घंटे पहले ही आ पहुंचे। जब यह ज्ञात हुआ कि तट की अनुपयुक्तता के कारण अवतरण पोत से उतरना संभव नहीं है तो वे व्यक्तिगत रूप से काफी जोखिम उठा कर उस पार गए। वे काक्स बाजार की ओर रवाना हुए और उस क्षेत्र का नियंत्रण अपने हाथ में लेने के पश्चात आगे के अवतरण को सुगम बनाने के लिए स्थानीय मोटर चालित मत्स्य नौकाओं पर, जिनकी उन्होंने ही कमान की, प्रयोग किया। इस प्रकार उन्होंने असंख्य कार्मिकों को थोड़े समय में उनके हथियारों, गोला बारूद एवं उपस्करों सहित काक्स बाजार में उतरने में सहायता की।

इस कार्यवाही में कमाण्डर राजेन्द्र प्रसाद भल्ला ने साहस, पहल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

4. कमाण्डर चवुर जार्ज फ्रांसिस
भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध के दौरान कमाण्डर चवुर जार्ज फ्रांसिस, अनुभवी बेड़े, जिसने बंगाल की खाड़ी में हुए संक्रियाओं में भाग लिया, के कमान अफसर थे। बहुत थोड़े समय में, पूर्वी बेड़े को संभारिका सहायता पहुंचाने के लिए, पोत को अपना नया रूप बदलना अपेक्षित था। कमाण्डर चवुर जार्ज फ्रांसिस ने पोत को कम से कम समय में तैयार करवाया। उनकी योग्य कमान के अन्तर्गत पोत अग्रिम बेसों और संक्रिया क्षेत्रों में पूर्वी बेड़े को आवश्यक वस्तुएं, जैसे ईंधन, जल और स्टोर सप्लाई करता रहा।

आद्योपान्त कमाण्डर चवुर जार्ज फ्रांसिस ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

5. कमाण्डर जोगेन्द्र खन्ना (एक्स०),
भारती नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमाण्डर जोगेन्द्र खन्ना पश्चिमी बेड़े के पोतों में से एक के कमान अफसर थे। इस पोत को बम्बई के इर्द-गिर्द निगरानी रखने और पश्चिमी बेड़े को अन्य यूनिटों को संभारिकी सहायता पहुंचाने का आदेश दिया गया। उन्होंने सभी सौंपे गए कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा किया। एक अवसर पर, पोत में एक खराबी उत्पन्न हो गई जिसको यदि तत्काल दूर न किया जाता तो पोत को सौंपे गए आवश्यक काम के पूरा होने में रुकावट आ जाती। उन्होंने कम से कम समय में पोत की मरम्मत करके स्वयं उदाहरण प्रस्तुत कर अपने नौसैनिकों को प्रेरित किया। उन्होंने व्यापारी जहाज, जो पाकिस्तान को वर्जित माल ले जाते हुए पाया गया था, का पीछा करने के लिए एक पोतारोहण दल भी भेजा। बाद में इस जहाज को भारतीय बन्दरगाह पर सुरक्षित ले आया गया।

आद्योपान्त कमाण्डर जोगेन्द्र खन्ना ने साहस, व्यवसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

6. कमाण्डर हरी मोहन लाल सक्सेना (एक्स०),
भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान हरी मोहन लाल सक्सेना भारती नौसेना पोत विक्रांत के प्रशासन अफसर के रूप में युद्ध दक्षता के उच्चतम मानक के संगठन और उसके अनुरक्षण के लिए उत्तरदायी थे। साथ ही वे क्षति नियंत्रण तत्परता जो कि वायुयान वाहक में विशेष महत्व की थी, का उच्चतम मानक सुनिश्चित करने के लिए भी उत्तरदायी थे। जो काम उन्हें सौंपा गया उन्होंने उसे गौरवपूर्वक पूरा किया।

आद्योपान्त कमाण्डर हरी मोहन लाल सक्सेना ने साहस, व्यावसायिक कौशल कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

7. कमाण्डर राजेन्द्र राय सूद, (ई०) बी० एस० एम०
भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमाण्डर राजेन्द्र राय सूद पश्चिमी बेड़े के ध्वज पोत के इंजीनियर अफसर थे। उन्होंने संघर्ष की अवधि में आदि से अन्त तक पोत की भौतिक दक्षता की उच्चतम स्थिति को दृढ़ बनाए रखा। उन्होंने अपने विभाग को अत्यन्त दक्षता से संगठित किया और युद्ध में विजय सुनिश्चित करने के लिए उच्च व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व का प्रदर्शन किया। उनके विपुल अनुभव ने बेड़े की छोटी यूनिट को उनकी भौतिक दक्षता में सुधार का सहयोग दिया।

आद्योपान्त कमाण्डर राजेन्द्र राय सूद ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

8. कमाण्डर चन्द्र मोहन व्यास (एक्स०), भारती नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमाण्डर चन्द्र मोहन व्यास पूर्वी बेड़े के फ्लैग अफसर कमांडिंग के स्टाफ में बेड़ा संक्रिया अफसर थे। पूर्वी बेड़े के पोतों को प्रशिक्षित करना और उन्हें एक ऐसे मानक तक लाना, जहां विभिन्न किस्मों के पोत एक समन्वित यूनिट के रूप में काम कर सकें, इस अफसर का दायित्व था। उन्होंने अत्यन्त उत्साहपूर्वक इस कार्य को संभाला और कठोर श्रम को क्षमता और व्यावसायिक निपुणता के बल पर असाधारण परिणाम प्राप्त किए। वह लगातार कई दिनों लम्बे समय तक काम करते रहे और उन्होंने युद्ध की सफल समाप्ति के लिए प्रचुर योगदान दिया। साथ ही उन्होंने युद्ध-बन्दियों की निकासी के कार्य का भी सफलतापूर्वक समन्वय दिया।

आद्योपान्त कमाण्डर चन्द्र मोहन व्यास ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

9. कमाण्डर त्रिभुवन नारायण सिंधल (एक्स), भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, कमाण्डर त्रिभुवन नारायण सिंधल एक भारतीय नौसेना पोत की कमान कर रहे थे, और एक अवतरण पोत स्कवाड्रन के वरिष्ठ अफसर थे। पोत के प्राथमिक जल-थल कार्य के अतिरिक्त उनके पोत को पूर्वी बेड़े को संभारिकी सहायता प्रदान करने के लिए व्यापक रूप से प्रयुक्त किया गया था। पोत द्वारा वाहित स्टोर, ईंधन और कार्मिकों की वृहत मात्राओं से, बेड़े को दीर्घकालीन अवधियों के लिए अग्रिम बेसों से संक्रिया रहने की सामर्थ दी। उन्होंने पोत को निर्विघ्न संक्रियात्मक उपलब्धता सुनिश्चित की और उनके पोत को दिए गए सभी कार्यों को सम्मानपूर्वक पूरा किया।

आद्योपान्त कमाण्डर त्रिभुवन नारायण सिंधल ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

10. सर्जन कमाण्डर ज्ञानामणि पीटर क्रिश्चियन, भारतीय नौसेना।

सर्जन कमाण्डर ज्ञानामणि पीटर क्रिश्चियन उन पोतों में से एक पर थे जिसने दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान बंगाल की खाड़ी में संक्रियाओं में भाग लिया। पोत में सवार 20 युद्ध-बन्दियों में से एक गम्भीर रूप से बीमार थे। सर्जन कमाण्डर क्रिश्चियन ने समुद्र में ही उसका उपचार किया रोगी की छाती में से श्रेप्नेलों को निकालने के लिए कई बार उसका आप्रेशन करना पड़ा। उन्होंने उस रोगी की तब तक लगातार देखभाल की जब तक कि वह खतरे से बाहर नहीं हो गया।

इस प्रकरण में, सर्जन कमाण्डर ज्ञानामणि पीटर क्रिश्चियन ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

11. कमाण्डर गुलाब मोहन लाल हीरानन्दानी (एक्स) भारतीय नौसेना।

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमाण्डर गुलाब मोहन लाल हीरानन्दानी, पश्चिमी बेड़े के बेड़ा संक्रिया अफसर थे। इस रूप में उनका प्राथमिक दायित्व पश्चिमी बेड़े का संगठन और उसकी युद्ध-दक्षता बनाए रखना था। समुद्र पर क्षण-क्षण बदलने वाली सामरिक स्थितियों के मध्य दिन और रात के विषम प्रहरों में उन्होंने असंख्य ड्यूटियों का पालन किया। अरब सागर में पश्चिमी बेड़े को संक्रियाओं की सफलता में उनकी अत्यधिक सतर्क योजनाओं और उनके निष्पादन का सराहनीय योगदान रहा।

आद्योपान्त कमाण्डर गुलाब मोहन लाल हीरानन्दानी ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

12. कमाण्डर सुखमल जैन (एक्स), भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमाण्डर सुखमल जैन उन भारतीय नौसेना पोतों में से एक के कमाण्डर थे जो टास्क फोर्स का एक अंग था। बन्दरगाह से चलने के समय से लेकर उनके बन्दरगाह पर 13 दिन के पश्चात लौटने तक वे शत्रु के विरुद्ध कठोर संक्रिया में संलग्न रहे। उन्होंने अनेक पनडुब्बीरोधी आक्रमण किए। उन्होंने शत्रु पोत को रोकने में सक्रिय रूप से भाग लिया और 60 लाख रुपए का वर्जित सोना शत्रु तक पहुंचने से रोका। अपने पोत को टरबाइनों में से एक के मुख्य रूप से खराब हो जाने के बावजूद उन्होंने अपने पोत को युद्ध में लड़ने योग्य बनाए रखा।

आद्योपान्त कमाण्डर सुखमल जैन ने साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

13. कमाण्डर त्रिलोचन सिंह खुराना (एक्स) भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमाण्डर त्रिलोचन सिंह खुराना पश्चिमी बेड़े के बेड़ा दिकचालक अधिकारी थे। उन्होंने समुद्र में संक्रिया कार्यवाहियों की हर अवस्था के पश्चात सेनाओं का और उत्तरी अरब सागर के विस्तृत भाग पर छाए बेड़े का सही विन्यास और पुनर्वर्गीकरण बार-बार परिवर्तित होने वाली सामरिक स्थिति में सुनिश्चित किया। इस प्रकार उन्होंने अरब सागर में पश्चिमी बेड़े की संक्रिया कार्यवाहियों की सफलता में सराहनीय योगदान दिया।

आद्योपान्त कमाण्डर त्रिलोचन सिंह खुराना ने व्यावसायिक कौशल, और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

14. कमाण्डर रणजीत कुमार चौधरी (एक्स)
वी० एस० एम०,
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमाण्डर रणजीत सिंह कुमार चौधरी अरब सागर में संक्रिया कार्यवाही में भाग लेने वाले भारतीय नौसेना पोतों में से एक पोत के कमान अफसर थे । उन्होंने एक पनडुब्बी पर आक्रमण किया, एक पाकिस्तानी व्यापारी जहाज के लिए 6,000 वर्ग मील के क्षेत्र की खोजबीन की और शत्रु के समुद्री तट पर किए जाने वाले आक्रमण में भाग लिया । उन्होंने एक पाकिस्तानी पोत को शत्रु तट से परे खदेड़ दिया और शत्रु के पनडुब्बी और हवाई हमले का खतरा होते हुए भी एक दूसरे शत्रु के व्यापारी जहाज को घेर कर बम्बई ले आए । सौंपे हुए समस्त कार्यों को उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया और इस प्रकार उन्होंने अपने अधीन सभी अफसरों और नौसैनिकों में विश्वास की लहर उत्पन्न की ।

आद्योपान्त कमाण्डर रणजीत कुमार चौधरी ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

15. कमाण्डर हरदेव सिंह (एक्स)
भारतीय नौसेना ।

कमाण्डर हरदेव सिंह दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान दक्षिणी अरब सागर में भेजे गए पोतों में से एक पोत के कमान अफसर थे । उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि पोत की युद्ध दक्षता अपने शीर्ष पर हो और बदलती हुई सामरिक स्थितियों के प्रति कारगर हो । उनके पोत को व्यापारिक युद्ध और गश्त के काम पर लगाया गया था । संघर्ष के पहले ही दिन उन्होंने एक पाकिस्तानी व्यापारी पोत को अपने कब्जे में किया । उनके पोत के एक दल ने सफलतापूर्वक पोत का पीछा किया और उसे कोचीन बन्दरगाह पर सुरक्षित ले आए । सौंपे गए सभी कार्यों को उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया और इस प्रकार अपने अधीन सभी अफसरों और नौसैनिकों में विश्वास की भावना जागृत की ।

आद्योपान्त कमाण्डर हरदेव सिंह ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

16. कमाण्डर उमेश चन्द्र त्रिपाठी (एक्स)
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमाण्डर उमेश चन्द्र त्रिपाठी अरब सागर में संक्रिया के लिए भारतीय नौसेना पोतों, जो टास्क फोर्स का अंग था, में से एक पोत की कमान संभाले हुए थे । एक अवसर पर, उनके पोत में एक मुख्य खराबी उत्पन्न हो गई जिससे उसका सामान्यतः अपने बन्दरगाह पर लौटना अपेक्षित था । किन्तु उन्होंने अपने पोत की खराबी को दूर किया और संक्रिया शुरू कर दी । एक दूसरे अवसर पर उनके पोत में फिर एक बड़ी खराबी उत्पन्न हो गई । उन्होंने शीघ्र ही स्थिति पर काबू पा लिया । बहुत ही कम समय में उन्होंने पोत को दूसरे पोत से बांधकर इसे बम्बई सुरक्षित लिवा लाए । जैसे ही मरम्मत पूरी हुई वैसे ही वे अरब सागर में पनडुब्बी रोधी संक्रिया के लिए रवाना हो गए । उन्होंने युद्ध बन्द होने की घोषणा होने तक इन संक्रियाओं को अथक परिश्रम से सम्पन्न किया । उन्होंने सदैव अपने पोत को संक्रिया के लिए अधिकतम अवसरों पर उपलब्ध कराया और अपने पोत को सौंपे गए सभी कार्यों को सराहनीय ढंग से पूरा किया ।

आद्योपान्त कमाण्डर उमेश चन्द्र त्रिपाठी ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

17. कमाण्डर गुलाब टी० बधवानी (एक्स)
भारतीय नौसेना ।

कमाण्डर गुलाब टी० बधवानी दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान उस एक पोत के प्रशासन अफसर थे जो पश्चिमी बेड़े का अंग था। इस हैसियत में वे युद्ध-दक्षता का उच्चतम मानक बनाए रखने के लिए उत्तरदायी थे । उनके निजी उदाहरण ने पोत के सभी कार्मिकों को प्रेरणा दी । शत्रु के हमलों का मूल्यांकन करने और इन हमलों का प्रतिकार करने के लिए समाधान ढूंढने में उनका अनुभव और उनकी दूरदर्शिता सराहनीय थी ।

आद्योपान्त कमाण्डर गुलाब टी० बधवानी ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

18. कमाण्डर सीता प्रसाद कपरावन (एक्स)
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमाण्डर सीता प्रसाद कपरावन उस अनुरक्षी बेड़े के कमान अफसर थे जिसने अरब सागर में संक्रियाओं में भाग लिया । उन्होंने उन सौंपे गए सभी कामों को सफलतापूर्वक पूरा किया और इस प्रकार अपने अधीन सभी अफसरों और नौसैनिकों में विश्वास उत्पन्न किया । सौराष्ट्र से दूर उस क्षेत्र में कठिन संभारिकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वायुयानों और पनडुब्बियों से सततः खतरों के अन्तर्गत उनको सफल संक्रिया नौसैनिक सक्रिया के लिए अनमोल सिद्ध हुई ।

आद्योपान्त कमाण्डर सीता प्रसाद कपरावन ने सहास, नेतृत्व, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

19. कमाण्डर रवीन्द्र नाथ सिंह (एक्स),
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमाण्डर रवीन्द्र नाथ सिंह पश्चिमी बेड़े के पोतों में से एक के कमान अफसर थे । सौंपे गये समस्त कार्यों को उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया और इस प्रकार उन्होंने अपने अधीन अफसरों और नौसैनिकों में विश्वास की भावना उत्पन्न की । पनडुब्बी के आक्रमणों के सततः खतरों के बावजूद तथा एक खराब पोत को खींचकर ले जाने पर भी उनकी जागरूकता और दृढ़ संकल्प में

उन्हें संक्रिया में आद्योपान्त बेड़े को बनाए रखने के लिए सफल बनाया । वर्जित माल के नियन्त्रण के लिए उन्होंने व्यापारी जहाजों के सम्पर्क का अथक परिश्रम करके पता लगाया । उन्होंने एक पाकिस्तानी व्यापारी जहाज को अपने कब्जे में कर लिया और उसे पनडुब्बी और हवाई खतरों के होते हुए भी घेर कर बम्बई ले आए ।

आद्योपान्त कमाण्डर रवीन्द्र नाथ सिंह ने साहस, नेतृत्व और व्यावसायिक कौशल का प्रदर्शन किया ।

20. कमाण्डर महेन्द्र पाल वधावन (एक्स) बी०एस०एम०,
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमाण्डर महेन्द्र पाल वधावन कोचीन में स्थित अन्वेषण स्कवाड्रन की कमान कर रहे थे । इन हेलिकाप्टरों, को अल्प सूचना पर अधिकांश वायुकर्मी दल के साथ अग्रिम बेस पर जाने का आदेश दिया गया । कमाण्डर वधावन ने तुरन्त कार्यवाही की और रातों-रात वायु टुकड़ियों का संगठन किया जिन्होंने कुछ हेलिकोप्टरों को अगले दिन अग्रिम बेस से कार्यवाही करने के लिए समर्थ बनाया । शेष वायुयान उसके तुरन्त बाद आ मिले । उन्होंने अपने वायुयानों को सेवा उपयोगी बनाए रखा और इस प्रकार शत्रु को जल-मग्न हमला करने से रोका ।

आद्योपान्त कमाण्डर महेन्द्र पाल वधावन ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

21. कमाण्डर वर्नन फ्रांसिस रिबेलो (एक्स),
भारतीय नौसेना ।

कमाण्डर वर्नन फ्रांसिस रिबेलो दिसम्बर, 1971 के भारत पाक संघर्ष के दौरान बंगलादेश में अवतरण संक्रियाओं के प्रभारी थे । पहले उनसे पोत पर बड़ी संख्या में स्टोर और कार्मिकों के पोतारोहण के आयोजन के लिए कहा गया । यह सब केवल उनके संगठन कौशल, अथक प्रयत्नों और सूझ-बूझ का ही फल था कि कुछ ही घण्टों में पोता-रोहण का कार्य सम्पन्न हो गया । इसके पश्चात् दिन रात समुद्र पर, अवतरण यानों में लदान के लिए स्टोर का पुनर आवंटन और पुनर उपवेशन और तटों पर कार्मिकों और स्टोर का परिवर्ती अवतारण, कमाण्डर रिबेलो के लिए बहुत अधिक होता गया जो उनकी सामान्य ड्यूटी की अपेक्षाओं से कहीं अधिक था । अवतारण संक्रियाओं के सफल संयोजन का श्रेय अधिकांश रूप में कमाण्डर रिबेलो को दिया जाना चाहिए ।

आद्योपान्त कमाण्डर वर्नन फ्रांसिस रिबेलो ने साहस, संगठन योग्यता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

22. कमाण्डर रवीन्द्र सिंह हूजा (ई),
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान कमांडर रवीन्द्र सिंह हूजा भारतीय नौसेना पोतों में से एक के इंजीनियर अफसर थे जिसने बंगाल की खाड़ी में हुई संक्रियाओं में भाग लिया । 4 दिसम्बर 1971 को पनडुब्बी एक रोधी कार्यवाही में संलग्न रहते समय एक इंजन में से निकास गैस खतरनाक रूप से रिसने लगी जिसने इंजन कक्ष को धुएं और भाप से भर दिया । संक्रिया की सफलता के लिए इस खराबी को शीघ्र ठीक करना अत्यावश्यक था । कमाण्डर रवीन्द्र सिंह हूजा, अपने दल का नेतृत्व करते हुए धुएं से आच्छादित इंजन कक्ष में घुस गए और आपाती मरम्मतें पूरी की गई । इस कार्यवाही ने संक्रिया की सफलता में योगदान दिया । पुनः 15 दिसम्बर, 1971 को, जल-थल अवतरण में रत एक भारतीय नौसेना पोत को क्षति पहुंची । मरम्मत के काम के लिए कमाण्डर रवीन्द्र सिंह हूजा के नेतृत्व में एक दल भेजा गया । उन्होंने अपने प्राणों को संकट में डाल कर, बहुत अधिक जल प्लावित कक्षों में सारी रात काम करके अस्थाई मरम्मत पूरी की जिससे वह पोत अवतरण संक्रिया में भाग लेने योग्य हो सका ।

इन कार्यवाहियों में कमाण्डर रवीन्द्र सिंह हूजा ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

23. कार्यकारी कमाण्डर पल्लासरना परमेश्वर अय्यर शिवामणि (एक्स),
भारतीय नौसेना ।

बंगलादेश में पाकिस्तानी सेनाओं द्वारा हथियार डाल देने के बाद कमाण्डर पल्लासरना परमेश्वर अय्यर शिवामणि को यह दायित्व सौंपा गया कि वे चिटगांव से परे एक जलधारा में से सुरंगों को हटा दें ताकि यह बन्दरगाह सामान्य जहाजरानी यातायात के लिए खुल जाए । शत्रु ने इस क्षेत्र में अंधाधुंध रूप से सुरंगें बिछाकर चिटगांव बन्दरगाह के सभी मार्ग अवरूद्ध कर दिए थे । कमाण्डर शिवामणि पूर्वी बेड़े के फ्लैग अफसर कमांडिंग के अधीन उन अफसरों में से एक थे जिन्हें बंगलादेश के इस प्रमुख बन्दरगाह को परिचालन के लिए अविलम्ब तैयार करने का दायित्व सौंपा गया था । उन्होंने स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके सुरंग मार्जक गीयर का काम चलाया और जलधारा के मार्जन के लिए मत्स्य जाल-पोतों का प्रयोग किया । काम चलाऊ विधि से जलधारा का मार्जन करते समय उन्होंने स्वयं एक सुरंग पर प्रहार करने का गम्भीर खतरा मोल लिया । उनके दृढ़ निश्चय और लगन ने नौसैनिकों और स्थानीय मत्स्य पोतों के कर्मी दलों को इस खतरनाक अभियान में स्वेच्छा पूर्वक भाग लेने के लिए उत्साहित किया । पुनः यह सुनिश्चित करने के लिए कि जलधारा प्रवाह से सुरंगों को पूर्णतः हटा लिया गया है, उन्होंने मार्जन जांच करने के लिए काम चलाऊ गीयर सहित छोटे-छोटे पोतों का प्रयोग किया । मार्जन जांच की समाप्ति पर चिटगांव बन्दरगाह में प्रवेश करने के लिए जलधारा को गहरे डुबाव वाले पोतों के लिए चिह्नित किया गया ।

इस कार्यवाही में कमाण्डर पल्लासरना परमेश्वर अय्यर शिवमणि ने साहस, व्यावसायिक कौशल, पहल शक्ति और कर्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

24. लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर भारत भूषण (ई),
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर भारत भूषण भारतीय नौसेना पोत विक्रान्त के वरिष्ठ इंजीनियर अफसर थे । उन्होंने संघर्ष की अवधि में आदि से अन्त तक पोत को पूर्ण रूपेण परिचालित बनाए रखा । उन्होंने स्टीम कैटापुल्ट और अत्यन्त हल्की वात अवस्थाओं में वायुयानों के परिचालन के लिए अपेक्षित उच्चगति की सभी मांगों को पूरा किया । बहुत कर यह उनकी कौशल पूर्ण योजना ही का फल था जिससे, शत्रु के विरुद्ध युद्ध में उलझे इस वायुयान वाहक को सभी मांगों की प्रति सम्भव हो सकी ।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर भारत भूषण ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्य परायणता प्रदर्शित की ।

25. लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर मौलि भूषण घोष (ई),
भारतीय नौसेना ।

लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर मौलि भूषण घोष उन पोतों में से एक पर इंजीनियर अफसर थे जिसने 8-9 दिसम्बर, 1971 की रात्रि में कराची पर धावा बोला था । संक्रिया की सफलता और तत्पश्चात पोत की सुरक्षित वापसी बहुत अंशों में इस बात पर निर्भर थी कि पोत एक लम्बी अवधि तक लगातार एक उच्च गति पर स्टीम करने में समर्थ रहा । लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर मौलि भूषण घोष ने उन भयंकर खतरों के बावजूद जिनको पोत ने सामना किया, संक्रिया को इस सम्पूर्ण अवधि के मध्य पोत की मशीनों को चालू बनाए रखा । उन्होंने स्वयं अपनी देख-रेख में मशीनों को चलते-चलते मरम्मतें करवाई और इस प्रकार अपने अधीन कार्य कर रहे सभी नौसैनिकों में साहस का संचार किया ।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर मौलि भूषण घोष ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया ।

26. लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर (अब कमाण्डर) नरिन्द्र नाथ आनन्द (एक्स),
भारतीय नौसेना ।

लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर नरिन्द्र नाथ आनन्द उन पोतों में से एक पर एक्जीक्यूटिव अफसर थे जिसने 8-9 दिसम्बर, 1971 की रात्रि में कराची पर किए जाने वाले आक्रमण के लिए बेड़ा यूनिटों का नेतृत्व किया । वे 8 दिसम्बर के 1800 बजे से 9 दिसम्बर 1971 के 07.00 बजे तक पोत के ब्रिज के सन्निकट रहे । इस अवधि में पोत द्वारा अंतग्रहीत इलैक्ट्रानिक युद्ध आंकड़ों को लगातार आंकते रहे और कमान को उसके विवेक युक्त प्रयोग में सहायता देते रहे, जिसने संक्रिया की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया । उन्होंने सम्पूर्ण पोत को तत्काल कार्यवाही करने के लिए तैयार रखा । इस अफसर ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए उसको सौंपे गए कामों को पूरा करने में कर्तव्य के प्रति महती निष्ठा प्रदर्शित की और इस प्रकार अपने अधीन काम करने वाले सभी अफसरों और नौसैनिकों में साहस का संचार किया ।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर नरिन्द्र नाथ आनन्द ने साहस, व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

27. लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर यतीश कुमार सतीजा (ई),
भारतीय नौसेना ।

लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर यतीश कुमार सतीजा भारतीय पोत विक्रान्त पर वायु इंजीनियर अफसर थे जिसने दिसम्बर 1971 में बंगाल की खाड़ी में पाकिस्तान के विरुद्ध की गई संक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । उन्होंने अनुकरणीय ढंग पर अग्नि-रक्षण दलों का संगठन किया और इस बात को सुनिश्चित किया कि प्रतिदिन होने वाली सेवा अयोग्यताओं के साथ साथ युद्ध क्षतियों को पोत पर उपलब्ध साधनों से कम से कम समय में सुधारा/दोष मुक्त किया जाए । इन संक्रियाओं के आदि से अन्त तक, वह अपनी व्यक्तिगत सुविधाओं की परवाह न करते हुए अविराम रूप से कार्य करते रहे और इस प्रकार उन्होंने अपने अधीन काम कर रहे सभी नौसैनिकों में आत्मविश्वास को ज्योति जगाई ।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर यतीश कुमार सतीजा ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया

28. लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर शशि कान्त कुलश्रेष्ठ (एक्स),
भारतीय नौसेना ।

लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर शशि कान्त कुल श्रेष्ठ उन पोतों में से एक के कमान अफसर थे जिसको दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान दक्षिणी अरब सागर में तैनात किया था । उन्होंने यह सुनिश्चत किया कि पोत की युद्ध क्षमता अपनी पूरी महत्ता पर थी और बदलती हुई सामरिकी स्थितियों के प्रति प्रत्युत्तरदायी थी । उनके पोत को कोचीन से परे ट्रेड बारफेयर और गश्ती ड्यूटी पर तैनात किया गया । अनेक कठिनाइयों के बावजूद, पोत सतत उच्च गति बनाए रखते हुए दीर्घकाल तक लगातार समुद्र में रहा । सौंपे गए सभी कामों को उन्होंने पूरा किया और इस प्रकार अपने सभी अफसरों और नौसैनिकों में विश्वास की ज्योति जगाई ।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर शशि कान्त कुल श्रेष्ठ ने साहस, व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

29. लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर अश्विनी कुमार शर्मा (एक्स),
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर अश्विनी कुमार शर्मा भारतीय नौसेना के टास्क फोर्स के पोतों में से एक पोत के कमान अफसर थे जिसे बंगाल की खाड़ी में पाकिस्तानी नौसेना के विरुद्ध संक्रिया का आदेश दिया गया था । उनके पोत को बंगला देश की नाकाबन्दी तथा वर्जित माल के नियंत्रण के लिए तैनात किया गया था । उनकी सावधानी से अनेक पोतों तथा जलयानों को रोका गया तथा उन पर कब्जा कर लिया गया । कोक्स बाजार पर जल-थल संक्रिया के लिए अवतरण करने में भी इनके पोत ने भाग लिया । इस पोत ने पहले सेना दल का अवतरण किया । अवतरण के लिए परिस्थितियां अत्यन्त कठिन थी और अन्तिम क्षण योजना को बदलना पड़ा ।

लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर अश्विनी कुमार शर्मा ने उन्हें सौंपे गए कार्य में अपनी जान की परवाह न करते हुए कार्य किया तथा उन्होंने अपने अधीनस्थ अफसरों एवं नौसैनिकों को साहसिक प्रेरणा दी ।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर अश्विनी कुमार शर्मा ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

30. लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर कनकीपति अप्पाला सत्यनारायण जगपति राजू (एक्स),
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर कनकीपति अप्पाला सत्यनारायण जगपति राजू, बंगाल की खाड़ी में स्थित भारतीय नौसेना के पूर्वी बेड़े के एक पोत पर एक्जीक्यूटिव अफसर थे जिन्हें पाकिस्तानी नौसेना के विरुद्ध आक्रमण करने का आदेश दिया गया था । 15 दिसम्बर 1971 को पूर्वी बेड़े को कोक्स बाजार के निकट सैनिकों को उतारने का अदेश दिया गया । जल-थल संक्रिया दल के लिए उनके पोत को गन सहायता देनी पड़ी । भारी झागों भरी महा तरंगों के कारण बार-बार प्रयत्न करने पर पोतों से सैन्य दल का अवतरण सम्भव नहीं था । लेफ्टिनेन्ट कमान्डर राजू ने अत्यन्त जोखिम पूर्ण परिस्थितियों में, निश्चय और साहस के साथ पर्याप्त मात्रा में सैन्य दल को पोत ह्वेलर की सहायता से उतारा ताकि तट शीर्षस्थापित किया जा सके । यद्यपि ह्वेलर दल-दल में फंस कर क्षतिग्रस्त हो गया, उन्होंने संक्रिया पूरी करने के लिए दूसरे ह्वेलर का प्रयोग किया । तत्पश्चात् उसी दिन अपराह्न में अवतरण जलयान को नौका खींचने की रस्सी से 600 गज दूरी पर स्थित दूसरे पोत को जोड़ने की सफलतापूर्वक व्यवस्था की । इस योगदान से जमीन में धंसे हुए जलयान को तैरने में सहायता मिली ।

इस संक्रिया में, लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर कनकीपति अप्पाला सत्यनारायण जगपति राजू ने साहस, व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

31. लेफ्टिनेन्ट कमांडर उत्फुल्ल दवीर (एक्स),
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट कमांडर उत्फुल दवीर उन भारतीय नौसेना पोतों में से एक की कमान कर रहे थे जो बंगाल की खाड़ी में संक्रिया के लिस्टास्क फोर्स का अंग था । उनके पोत को बंगला देश के बन्दरगाहों की नाकादन्दी लागू करने और वर्जित माल के नियंत्रण के लिए तैनात किया गया था । उनकी जागरूकता से बहुत से पोतों और जलयानों को रोका गया और उन्हें पकड़ लिया गया उनका पोत कोक्स बाजार में सैन्य-टुकड़ियों को उतारने के काम में लगी हुई जलस्थलीय सेना दल का अंग भी था । अनेक कठिनाइयों के बाव जूद उनके पोत में असंख्य सैन्य टुकड़ियों और उपकरणों को तट पर ले लाया गया ।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट कमांडर उत्फुल्ल दवीर ने साहस, व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

32. लेफ्टिनेन्ट कमांडर जौन विलियम डैनियल (एक्स),
भारतीय नौसेना ।

लेफ्टिनेन्ट कमांडर जौन विलियम डैनियल यार्ड जलयान, जिसका दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान सहायता ड्यूटियों के लिए प्रयोग किया गया था, की कमान कर रहे थे । इस जलयान ने संघर्ष के दौरान आदि से अन्त तक एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की । इसने सौराष्ट्र के तट के पास वाले क्षेत्र में संक्रिया करने वाली सेना अथवा उस क्षेत्रमें पड़ाव डालने वाली सेना की सहायता के लिए काम किया । यह वास्तविक रूप में सैन्य संचालन वेस बन गया और इसने इन संक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की । उनके प्रयत्न न केवल इस क्षेत्र में वाह्य यूनिटों की सहायता सुनिश्चित करने में ही हुए बल्कि शत्रु के विरुद्ध आक्रमक कार्यवाही के करने में भी सफलीभूत हुए ।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट कमांडर जौन विलियन डैनियल ने साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

33. लेफ्टिनेन्ट कमांडर जनार्दन देव (एक्स)
भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, लेफ्टिनेन्ट कमांडर जनार्दन देव भारतीय नौसेना के टास्क फोर्स के पोतों में से एक पर एग्जीक्यूटिव अफसर थे, जिसे कराची से इधर पाकिस्तानी नौसेना के जंगी जहाजों को बीच में ही रोकने और ध्वस्त करने का आदेश दिया गया था । 4/5 दिसम्बर की रात को हुए हमलों में उनका पोत केवल अपनी संक्रियाओं के लिए ही उत्तरदायी नहीं था अपितु अपने अन्य जलयानों पर आक्रमण किये जाने पर उनकी सहायता का भार भी इन्हीं पर था । लेफ्टिनेन्ट कमांडर जनार्दन देव ने विस्तृत छानबीन की और युद्ध दक्षता में उच्चस्तर को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिससे संक्रिया सम्पूर्ण सफल रही । फिर 10 दिसम्बर, 1971 को जब उनका पोत, भारतीय नौसेना पोत खुकरी के जीवित व्यक्तियों को लाने के लिए भेजा गया तब उन्होंने बचाव कार्य को अत्यंत कुशलता से संगठित किया । पनडुब्बी के कहीं भी छिपी होने के खतरे के कारण यह आवश्यक था कि जीवित व्यक्तियों को उठाने के पश्चात यथा शीघ्र पोत यात्राधीन हो जाए । उनके योग्य नेतृत्व में सम्पूर्ण संक्रिया शीघ्रता से पूर्ण हुई ।

इन कार्यवाहियों में, लेफ्टिनेन्ट कमांडर जनार्दन देव ने साहस, नेतृत्व एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

34. लेफ्टिनेन्ट कमांडर विष्णु कुमार रायजादा (एल)
भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट कमांडर विष्णु कुमार रायजादा को गश्ती नौकाओं के रूप परिवर्तन और पुन आसंजन का काम सौंपा गया । इस काम में नौकाओं में परिवर्तन और परिवर्धन करना और उनको कम से कम समय में गन बोटों में परिवर्तित करना भी शामिल था । उन्होंने अपने विभाग का सुचारू ढंग से संगठन किया और काम को निर्धारित समय से पहले ही पूरा किया । इसके अतिरिक्त, उन्होंने नौकाओं के परीक्षण के दौरान संक्रिया कार्यवाही के लिए उनकी गतिपूर्ण

उपयोगिता सुनिश्चित करने के लिए निजी तकनीकी सहायता उपलब्ध कराई। बहुत कर यह उन्ही की वजह से था कि गन बोटों ने भी असाधारण सफलता प्राप्त की।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट कमांडर विष्णु कुमार रायजादा ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

35. लेफ्टिनेन्ट कमांडर सुरेन्द्र नाथ झा (ई)
भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, लेफ्टिनेन्ट कमांडर सुरेन्द्र नाथ झा भारतीय नौसेना के टास्क फोर्स के उन पोतों में से एक के इंजीनियर अफसर थे जो बंगाल की खाड़ी में युद्ध रत था। 15 दिसम्बर 1971 को कोक्स बाजार से इधर संक्रिया के दौरान, अवतरण पोतों में से एक तट पर पहुंचते समय जमीन में धंस गया। लेफ्टिनेन्ट कमांडर सुरेन्द्र नाथ झा को उस पोत में मरम्मत करने के लिए मरम्मत दल के प्रभारी अफसर के रूप में भेजा गया। अपने जीवन को गंभीर जोखिम में डाल कर भारी जल प्लावित कक्षों में रात भर काम करके वह पोत को जलयात्रा योग्य बनाने में समर्थ रहे।

इस कार्य में, लेफ्टिनेन्ट कमांडर सुरेन्द्र नाथ झा ने साहस, व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

36. लेफ्टिनेन्ट कमांडर सुरेश सूटा (ई)
भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट कमांडर सुरेश सूटा भारतीय नौसेना पोत विक्रान्त के उड़ान डेक इंजीनियर थे। वे शत्रु के विरुद्ध संक्रिया में रत वायुयानों को भेजने करने और वापस लाने के लिए उत्तरदायी थे। उन्होंने पोत की मांग पूरी करने के लिए दिन रात काम किया। एक अवसर पर, जब दो वायुयान हवा में ही थे तो पश्च उत्थापिका नीचे फंस गई उस समय जबकि वायुयानों के डिच होने में केवल मात्र 6 मिनट शेष रह गए थे, उन्होंने उत्थापिका को ऊपर लाने में बड़ी सूझ-बूझ का परिचय दिया।

आद्योपान्त, लेफ्टिनेन्ट कमांडर सुरेश सूटा ने तकनीकी कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

37. लेफ्टिनेन्ट कमांडर मनोरंजन शर्मा (एक्स)
भारतीय नौसेना

9 दिसम्बर, 1971 को जब भारतीय नौसेना पोत खुकरी अरब सागर में शत्रु की पनडुब्बियों के विरुद्ध हंटर-किलर संक्रियाओं में लगा हुआ था और जब उसी दौरान उसे तारपीडो कर दिया गया था उस समय लेफ्टिनेन्ट कमांडर मनोरंजन शर्मा इसी पोत पर थे। आदेश मिलने पर उन्होंने घोर अंधेरे में पोत परित्याग किया। उन्होंने अपने आप को कुछ नौसैनिकों के समीप पाया जो स्वयं तिरते रहने का संघर्ष कर रहे थे। सन्निहित खतरे की परवाह किये बिना और अपनी सुरक्षा की पूरी अवहेलना करते हुए, अपने पोत के साथियों की सहायता करने के लिए उन्होंने ठंडे और तेलीय समुद्री जल में से तैर कर लम्बी दूरी तय की। इस प्रकार, उन्होंने जीवन रक्षी तरापे में पहले चढ़ने के बजाए तीन नौसैनिकों को इस तक पहुंचने में सहायता की। आगे भी, उन्होंने 25 कार्मिकों को जीवन रक्षी तरापे में एकत्रित किया और स्वयं उदाहरण प्रस्तुत कर उनका मनोबल, बचाव जलयान के आने तक, बढ़ाते रहे।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट कमांडर मनोरंजन शर्मा ने वीरता, पहल और नेतृत्व का परिचय दिया।

38. लेफ्टिनेन्ट कमांडर जसबीर सिंह चीमा (ई)
भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट कमांडर जसबीर सिंह चीमा उन भारतीय पोतों में से एक के इंजीनियर अफसर थे जो अरब सागर में पाकिस्तानी नौसेना के विरुद्ध संक्रियाओं में टास्क फोर्स का अंग था। 8 दिसम्बर, 1971 को समुद्र में संघर्ष के दौरान पोत की पोर्ट गैस टरबाइन खराब हो गई। पोर्ट शैफ्ट, जिसने पोत की गति को कम कर दिया था, को बन्द करना अनिवार्य हो गया था। लेफ्टिनेन्ट कमांडर जसबीर सिंह चीमा ने खराब मशीनरी की मरम्मत करने का निश्चय किया। अपनी उच्च-व्यावसायिक जानकारी और कौशल से उन्होंने बहुत ही कम समय में मरम्मत पूरी कर दी। उन्होंने पोत को मरम्मत के लिए लौटा ले जाने के बजाए उसे युद्ध क्षेत्र में लगातार रहने के लिए उसकी पर्याप्त गति बनाए रखने की व्यवस्था की।

इस संक्रिया में, लेफ्टिनेन्ट कमांडर जसबीर सिंह चीमा ने तकनीकी कुशलता, पहल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

39. लेफ्टिनेन्ट प्रभात कुमार जिन्दल (एल)
भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट प्रभात कुमार जिन्दल एक टास्क फोर्स के पोतों में से एक के उप विद्युत अफसर थे जिसको कराची से इधर पाकिस्तानी नौसेना के जंगी जहाजों को बीच में रोकने और नष्ट करने का आदेश दिया गया था। प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने विद्युत और इलैक्ट्रानिक उपस्करों की कार्य-प्रणाली को सर्वोत्तम स्तर पर बनाए रखा। उन्होंने अपने विभाग का अत्यन्त सुचारु ढंग से संगठन किया जिसने संक्रियाओं की सफलता को सुनिश्चित किया। पोत के विद्युत और इलैक्ट्रानिक उपस्करों में बिना किसी खराबी के संक्रियाओं की सफल समाप्ति किसी सीमा तक उन्हीं के कारण सम्भव हो सकी।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट प्रभात कुमार जिन्दल ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

40. लेफ्टिनेन्ट सुरेश हीरानन्द कुन्दनमल (एक्स)
भारतीय नौसेना

(मरणोपरान्त)

लेफ्टिनेन्ट सुरेश हीरानन्द कुन्दनमल उस समय भारतीय नौसेना पोत खुकरी पर थे जब 9 दिसम्बर, 1971 को अरब सागर में हंटर-किलर संक्रिया कार्यवाही करते समय उसे तारपीडो लगा। यद्यपि लेफ्टिनेन्ट सुरेश हीरानन्द कुन्दनमल के लिए पोत त्याग करने का समुचित अवसर था तो भी उन्होंने उसी पर ठहरे रहने और जीवन रक्षण कार्यवाही का पर्यवेक्षण करने का निश्चय किया। उन्होंने बहुत से नौसैनिकों की पोत त्याग करने में सहायता की। इस कार्य में उन्होंने अपने जीवन की बलि दे दी और पोत के साथ ही जल समाधि ले ली।

इस कार्यवाही में, लेफ्टिनेन्ट सुरेश हीरानन्द कुन्दनमल ने साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

41. लेफ्टिनेन्ट (स्पेशल ड्यूटी बोसुन) दर्शन लाल,
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट दर्शन लाल उन पोतों में से एक पर थे जिसने बंगाल की खाड़ी में संक्रियाओं में भाग लिया । 11 दिसम्बर, 1971 को उन्हें इनलैण्ड वाटर फ्राइटर, जिस पर नौसेना वायुयानों से राकेटों द्वारा पहले हमला किया जा चुका था, पर एक पोतारोहण दल के प्रभारी के रूप में भेजा गया । पोत पर सवार होने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि पोत का त्याग किया जा चुका है और इंजन कक्ष में पानी भर गया था । कर्मीदल ने पोत त्यागने से पूर्व पोत-टोटी की अंतर्गम पाइप को जान बूझ कर क्षतिग्रस्त कर दिया था । फ्राइटर के डूबने का खतरा था । उन्होंने पोत के लंगर डलवाने की व्यवस्था की और एक नौका को भी डूबने से बचाया जो समुद्र में आधी डूब चुकी थी और रस्सों में से एक के साथ लटक रही थी ।

इस संक्रिया में, लेफ्टिनेन्ट दर्शन लाल ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

42. लेफ्टिनेन्ट विनोद कृष्ण चौधरी (ई),
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट विनोद कृष्ण चौधरी पनडुब्बियों में से एक पर इंजीनियर अफसर थे । उन्होंने अपने विभाग का सुचारु ढंग से संगठन किया और मशीनरी को चालू रखा और इस प्रकार संघर्ष के दौरान इसे परिचालित रखा ।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट विनोद कृष्ण चौधरी ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

43. लेफ्टिनेन्ट जयशील विश्वनाथ नाटू (ई),
भारतीय नौसेना ।

लेफ्टिनेन्ट जयशील विश्वनाथ नाटू को गश्ती नौकाओं के रूप परिवर्तन और पुनः आसंजन का कार्य सौंपा गया था । उन्होंने अपने विभाग का सुचारू ढंग से संगठन किया और काम को निर्धारित समय से बहुत पहले ही पूरा कर दिखाया । इसके अतिरिक्त, संक्रिया के लिए इन नौकाओं की तत्काल उपयोगिता सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने नौकाओं के परीक्षण के दौरान तकनीकी सहायता की व्यवस्था की । वे उन गन बोटों में से एक पर थे जिसको मोंगिया और खुलना के पत्तनों में लक्ष्यों पर आक्रमण करने का काम सौंपा गया था । जब तक वे पोत पर रहे, उन्होंने अनेक कठिनाईयों के बावजूद मशीनरी को चालू स्थिति में रखा ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं में आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट जयशील विश्वनाथ नाटू ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

44. लेफ्टिनेन्ट विनोद कुमार जैन (एल),
भारतीय नौसेना ।

(मरणोपरान्त)

लेफ्टिनेन्ट विनोद कुमार जैन इलेक्ट्रानिकी के एक जिज्ञासु विद्यार्थी थे । वे अपना सम्पूर्ण अतिरिक्त समय पोतों पर विद्यमान इलेक्ट्रानिक उपस्करों में परिष्कार सुधार लाने की युक्ति निकालने में लगाया करते थे जिससे कि उनकी कार्य क्षमता और दक्षता में सुधार किया जा सके । इस योजना में लगे रहते समय वे भारतीय नौसेना पोत खुकरी पर थे । पोत को तारपीडो लगने की कार्यवाही में वे मारे गए ।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट विनोद कुमार जैन ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

45. लेफ्टिनेन्ट जार्ज एलबर्ट डानेल्ड ड्यूक (एक्स),
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, लेफ्टिनेन्ट जार्ज एलबर्ट डानेल्ड ड्यूक कमान उत्सर्जन गोताखोर दल के प्रभारी अफसर थे । यह दल नौसेना पोतों और बम्बई में आस्थानों की रक्षा का महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग था । वे इस बात की सुनिश्चितता के लिए उत्तरदाई थे कि नौसेना डाकयार्डों तक पोतों और समुद्र की ओर के मार्ग सुरंगों और अन्य विस्फोटकों से मुक्त रखे गए थे । युद्ध की अवधि में आदि से अन्त तक उन्होंने पोत-हल की जांच पड़ताल करने की सतत कार्यवाही को आवश्यक बनाये रखा । इस कार्य के सफल समापन में लेफ्टिनेन्ट ड्यूक का मुख्य रूप से योगदान रहा, जिन्होंने अपने अधीन नौसैनिकों में लगन और निष्ठा से कार्य को पूरा करने की ज्योति जगाई ।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट जार्ज एलबर्ट डानेल्ड ड्यूक ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

46. लेफ्टिनेन्ट गुरनाम सिंह (ई),
भारतीय नौसेना ।

लेफ्टिनेन्ट गुरनाम सिंह भारतीय नौसेना पोत विक्रान्त पर हरावल स्क्वाड्रनों में से एक के इंजीनियर अफसर थे । स्क्वाड्रन में वायुयान सेवा उपयोगिता को श्रेष्ठतम बनाए रखने के एक मात्र उद्देश्य से ही उन्होंने अपना काम पूरी लगन के साथ किया और उसमें अपना सम्पूर्ण समय और शक्ति लगाई । इस प्रकार उन्होंने दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के लिए प्रचुर मात्रा में वायुयानों की उपलब्धि कराई ।

आद्योपान्त लेफ्टिनेन्ट गुरनाम सिंह ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

47. लेफ्टिनेन्ट फूल कुमार पुरी (ई),
भारतीय नौसेना ।

लेफ्टिनेन्ट फूल कुमार पुरी भारतीय नौसेना के टास्क फोर्स के पोतों में से एक के इंजीनियर अफसर थे जिसको 4-5 दिसम्बर, 1971 की रात को कराची से इधर पाकिस्तानी नौसेना के जंगी जहाजों को बीच में रोकने और नष्ट करने का आदेश दिया गया था । संक्रिया की सफलता एवं बाद में पोत के सुरक्षित लौटना बहुत हद तक पोत की जटिल मशीनरी के सुचारू रूप से काम करने पर निर्भर करती थी । उन्होंने अपने विभाग का सुचा ढंग से संगठन किया और यह सुनिश्चित किया कि पोत-मशीनरी में किसी प्रकार की खराबी न आने पाए । संक्रिया की सफलतापूर्वक समाप्ति किसी सीमा तक उन्हीं के कारण थी ।

इस कार्यवाही में, लेफ्टिनेन्ट फूल कुमार पुरी ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

48. लेफ्टिनेन्ट एन्थोनी दे साम लज़ारो (एक्स०), भारतीय नौसेना ।

लेफ्टिनेन्ट एन्थोनी दे साम लज़ारो भारतीय नौसेना के टास्क फोर्स के पोतों में से एक पर एक्जीक्यूटिव अफसर थे जिसे 4–5 दिसम्बर, 1971 की रात को कराची से इधर पाकिस्तानी नौसेना के जंगी जहाजों को बीच में रोकने और नष्ट करने का आदेश दिया गया था। इस संक्रिया के दौरान में वह पोत की युद्ध दक्षता के अत्यन्त उच्चस्तर के अनुरक्षण के लिए उत्तरदाई थे। उन्होंने उन सभी कार्यों को जो उन्हें सौंपे गए थे सफलतापूर्वक पूरा किया और इस प्रकार अपने अधीन काम कर रहे सभी अफसरों और नौसैनिकों में विश्वास जगाया। इस प्रकार उन्होंने संक्रिया की सफलता के लिए कुछ कम योगदान नहीं दिया ।

इस संक्रिया में लेफ्टिनेन्ट एन्थोनी दे साम लज़ारो ने साहस, नेतृत्व, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

49. लेफ्टिनेन्ट (स्पेशल ड्यूटीज़ रेडियो) कश्मीरा सिंह, भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लेफ्टिनेन्ट कश्मीरा सिंह, भारतीय नौसेना पोतों में से एक पर थे जो बंगाल की खाड़ी में पाकिस्तान के विरुद्ध की जाने वाली संक्रयाओं में पूर्वी बेड़े का एक अंग था। उन्होंने यह सुनिश्चित कराने के लिए लम्बे समय तक कार्य किया कि सभी इलैक्ट्रानिक उपस्कर प्रभावी रूप से काम करें और इस प्रकार उन्होंने पोत की संक्रियात्मक क्षमता के लिए बहुत अधिक योगनान दिया।

आद्योपान्त लैफ्टिनेंट कश्मीरा सिंह ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

50. लैफ्टिनेंट रवीन्द्र कुमार नारद (ई०), भारतीय नौसेना।

लैफ्टिनेन्ट रवीन्द्र कुमार नारद भारतीय नौसेना के टास्क फोर्स के उन पोतों में से एक के इंजीनियर अफसर थे जिसे 8/9 दिसम्बर, 1971 की रात को कराची से ईधर शत्रु के युद्ध पोतों को बीच में रोकने और नष्ट करने का आदेश दिया गया था। वह इंजन कक्ष और अन्य सहयोगी मशीनों के प्रभावी परिचालन के लिए उत्तरदायी थे। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि मशीन में किसी खराबी या त्रुटिपूर्ण चालन के कारण पोत के उद्देश्य में बाधा न पड़े और साथ ही इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने अनेक बार तात्कालिक और महत्वपूर्ण मरम्मतें कीं।

इस संक्रिया में लैफ्टिनेन्ट रवीन्द्र कुमार नारद ने व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

51. लैफ्टिनेन्ट सुन्दर राज सम्पत गोपाल (एक्स०), भारतीय नौसेना।

लैफ्टिनेन्ट सुन्दर राज सम्पत गोपाल, भारतीय नौसेना के एक टास्क फोर्स के पोतों में से एक के एग्जीक्यूटिव अफसर थे और इस पोत को 4-5 दिसम्बर, 1971 की रात्रि को कराची से इधर पाकिस्तानी नौसेना के जंगी जहाजों को बीच में रोकने और नष्ट करने का आदेश दिया गया। उन्होंने पोत की कम्पनी को एक सुदक्ष और गतिकट गुम्फित लड़ाकू युनिट में नियोजित किया। उन्होंने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए, सभी सौंपे गए कार्यों को सफलता पूर्वक सम्पन्न किया और अपने अधीन काम करने वाले सभी अफसरों और नौसैनिकों में साहस का संचार किया। इस प्रकार उन्होंने संक्रियाओं की सफलता में कोई कम योगदान नहीं दिया ।

इस कार्यवाही में लैफ्टिनेन्ट सुन्दर राज सम्पत गोपाल ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

52. लैफ्टिनेन्ट अरविन्द लोचन (ई०), भारतीय नौसेना।

लैफ्टिनेन्ट अरविन्द लोचन, भारतीय नौसेना के एक पोत पर वरिष्ठ इंजीनियर अफसर के रूप में काम कर रहे थे। यह पोत 4 दिसम्बर, 1971 को समुद्र में संक्रियारत था जबकि लगभग 2120 बजे बायलरों की कालिख साफ की जा रही थी तो एक अतितापित वाष्प नली फट गई। लैफ्टिनेन्ट अरविन्द लोचन दौड़ कर वहां पहुंचे और उस स्थिति को सुधारने के लिए काम करने लगे। उन्होंने स्वयं सभी दरवाजों और झरोखों को खोला ताकि रिस रही वाष्प निकल सके, इस काम में उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह नहीं की तथा बायलर कक्ष के निगरानी कर्त्ताओं को बायलर कक्ष से बच निकलने में सहायता की। उनके द्वारा शीघ्र और सही कार्यवाही करने के परिणामस्वरूप पोत की मशीनों को होने वाला नुक्सान नगण्य रहा और वह अपनी ही शक्ति पर मार्ग तय करने में समर्थ रहा।

इस कार्यवाही में, लैफ्टिनेन्ट अरविन्द लोचन ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

53. लैफ्टिनेन्ट मालेदत्त वर्घीज पाल (एल०), भारतीय नौसेना।

लैफ्टिनेन्ट मालेदत्त वर्घीज पाल भारतीय नौसेना पोत विक्रान्त के हरावल स्क्वाड्रनों में से एक के विद्युत अफसर थे। उनके निर्देश और पर्यवेक्षण में वायुयान उपस्करों और आस्थानों में बहुत से सुधार किए गए। उनके द्वारा विभाग के दक्ष संगठन के कारण संक्रियाओं के लिए वायुयानों की अधिकतम संख्या उपलब्ध कराई जा सकी।

आद्योपान्त लैफ्टिनेन्ट मालेदत्त वर्घीज पाल ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

54. सब लैफ्टिनेन्ट (अब लैफ्टिनेन्ट) कैलाशपति रामलिंगप्पा गिरवाल्कर (ई०), भारतीय नौसेना।

सब-लैफ्टिनेन्ट कैलाशपति रामलिंगप्पा गिरवाल्कर, भारतीय नौसेना के फ्रिगेटों में से एक पर थे, जो 9 दिसम्बर, 1971 को पाकिस्तानी पनडुब्बियों के विरुद्ध हंटर-किलर संक्रियाओं में रत था । लगभग 2035 बजे, उनके पोत पर शत्रु की पनडुब्बियों ने तारपीडो से हमला किया। तारपीडो का पता लगने पर पोत के लिए यह आवश्यक हो गया कि वह तत्काल उच्चगति बनाए और शत्रु के तारपीडो से बचने के

लिए स्टीम करना जारी रखे। सब-लैफ्टिनेन्ट गिरवाल्कर, यद्यपि, उस समय ड्यूटी पर नहीं थे, दौड़ कर इंजन कक्ष में पहुंचे और सभी पूर्वोपाय करने के पश्चात् उन्होंने ब्रिज से प्राप्त आदेशों का अविलम्ब पालन किया। इस प्रकार उन्होंने पोत और उसके कार्मिकों की रक्षा की।

इस कार्यवाही में सब-लैफ्टिनेन्ट कैलाशपति रामलिंगप्पा गिरवाल्कर ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

55. सब-लैफ्टिनेन्ट भगवान सिंह ठाकुर (एक्स०), भारतीय नौसेना।

कोक्स बाजार पर जल-थल अवतरण के लिए थल सेना और नौसेना यूनिटों द्वारा एक योजना बनाई गई। इस संक्रिया की सफलता के लिए यह आवश्यक था कि अवतारण से पूर्व तट का प्रारम्भिक सर्वेक्षण किया जाए।

13/14 दिसम्बर, 1971 की रात को सब-लैफ्टिनेन्ट भगवान सिंह ठाकुर ने तट का प्रारम्भिक सर्वेक्षण किया यद्यपि वह अत्यंत जोखिमपूर्ण कार्य था। उनके दल एवं उनके द्वारा प्राप्त की गई सूचनाओं ने आगामी संक्रिया को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने तथा उनके दल के सदस्यों ने, अवतारण संक्रिया की अवधि में अपनी जान की परवाह न करते हुए अवतारण दल के कुछ सदस्यों को डूबने से बचाया। इन्होंने सौंपे गए कार्य के करने में उत्कृष्ट कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया और दल के अन्य सदस्यों में साहस का संचार किया।

इस संक्रिया में सब-लैफ्टिनेन्ट भगवान सिंह ठाकुर ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

56. सब-लैफ्टिनेन्ट अरूप कुमार बन्दोपाध्याय (एक्स), भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान सब-लैफ्टिनेन्ट अरूप कुमार बन्दोपाध्याय उस दल के एक अंग थे जिसे नौसेना आक्रामक टुकड़ियों के संगठन और प्रशिक्षण तथा गश्ती नौकाओं के कर्मी दलों के प्रबन्ध का दायित्व सौंपा गया था। उन्होंने यह सुनिश्चित करने में कोई कसर न छोड़ी कि उन्हें सौंपे गए कार्य न केवल सफलतापूर्वक सम्पन्न हों बल्कि समय से पूर्व भी हों। 8 से 10 दिसम्बर, 1971 की अवधि में वे उस गश्ती नौका पर सवार थे जिसने मंगला और खुलना के पत्तनों पर धावा बोला था।

आद्योपान्त सब-लैफ्टिनेन्ट अरूप कुमार बन्दोपाध्याय ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

57. सब-लैफ्टिनेन्ट मदनजीत सिंह अहलूवालिया (एक्स), भारतीय नौसेना।

9 दिसम्बर, 1971 को जब भारतीय नौसेना पोत खुकरी शत्रु की पनडुब्बियों के विरुद्ध हंटर-किलर संक्रियाओं में लगा हुआ था और जब उसी दौरान उसे तारपीडो कर दिया गया था उस समय सब लेफ्टिनेन्ट मदनजीत सिंह अहलूवालिया पोत पर तोप संचालन चौकी की निगरानी कर रहे थे। उन्हें पोत के डूबने से पहले ठीक उसे त्याग देने के लिए कहा गया। पोत त्यागने के तुरन्त पश्चात् उन्होंने देखा कि उनके पोत का एक साथी तैर पाने में बहुत कठिनाई अनुभव कर रहा था। चूंकि वहां कोई जीवन रक्षी तरापा नहीं दीख पा रहा था अतः उन्होंने अपनी जीवन रक्षी जाकेट उतार कर उसे दे दी और इस प्रकार उसकी प्राण रक्षा की तदन्तर उन्होंने उसी पोत के तीन अन्य नौसैनिकों को जीवन रक्षा तरापा पर चढ़ने में सहायता देकर बचाया।

इस कार्यवाही में सब-लेफ्टिनेन्ट मदनजीत सिंह अहलूवालिया ने साहस और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

58. सब लेफ्टिनेन्ट समीरकांति बसु (एक्स), भारतीय नौसेना

सब लेफ्टिनेन्ट समीरकांति बसु उस समय भारतीय नौसेना पोत खुकरी पर थे जब उसे अरब सागर में शत्रु पनडब्बियों के विरुद्ध हंटर-किलर संक्रियाओं में लगे होने पर 9 दिसम्बर, 1971 को तार पीडो कर दिया गया था। आदेश मिलने पर वे पोत को त्याग कर उस जीवन रक्षा तरापा की ओर तैरने लगे, जिसे पानी में उतार दिया गया था। जब कभी भी उन्हें अपने पोत के साथियों की करुण पुकार सुनाई पड़ती वे अपने जीवन रक्षी तरापा की सुरक्षा छोड़ कर दूर-दूर तक शीतल, स्याते और हलीय जल से तैरकर उनकी सहायता करने जाते। तेल के कारण आधे अन्धे होने और भयंकर सर्दी और शारीरिक थकावट के बावजूद भी वे अपने चार साथियों के प्राण बचाने में सफल हुए।

इस कार्यवाही में सब लेफ्टिनेन्ट समीरकांति बसु ने साहस का प्रदर्शन किया।

59. सब लेफ्टिनेन्ट (एस० डी० एम० ई०) राम प्रताप सिंह भारतीय नौसेना।

सब लेफ्टिनेन्ट राम प्रताप सिंह दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं में भाग लेने वाले पोतों में से एक के इंजीनियर अफसर थे। उन्होंने पोत की मशीनों को पूरी तरह से चालू अवस्था में रखा, वे लगातार काम में लगे रहे और उन्हें युद्ध के दौरान आदि से अन्त तक श्रेष्ठ अवस्था में रखा। उन्होंने अपने विभाग को बड़े युक्ति पूर्ण ढंग से संगठित किया जिससे पोत का बिना किसी खराबी के आदि से अन्त तक परिचालन होता रहा। उन्होंने "मिनी लेबर" नाम के एक व्यापारी जहाज पर भी अत्यन्त साहस और दृढ़ निश्चय के साथ काम किया जो कि बहुत बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था और उसके इंजन कक्ष में 5 फुट पानी भर गया था। अपनी व्यक्तिगत सुविधाओं की परवाह न करते हुए उन्होंने उस बुरी तरह क्षतिग्रस्त जहाज की मरम्मत की। यह केवल उनके अद्वितीय नेतृत्व, दृढ़-निश्चय और योजना का ही फल था जिसके कारण यह काम इतने कम समय में पूर्ण होकर, कीर्तिमान बन गया।

इस कार्यवाही में सब लेफ्टिनेन्ट राम प्रताप सिंह ने साहस, पहल और कर्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

60. शिव सिंह, मास्टर चीफ पैटी अफसर, प्रथम कोटि, सं० 31804
भारतीय नौसेना

शिव सिंह, मास्टर चीफ पैटी अफसर, प्रथम कोटि, दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान उन पोतों में से एक पर थे, जो अरब सागर में पाकिस्तान नौसेना के विरुद्ध संक्रियाओं के लिए एक टास्क फोर्स का अंग था। वह पोत के चीफ बोसन की ड्यूटियां निभा रहे थे। उनका पोत समुद्र में टास्क फोर्स के अन्य पोतों के पुनर-भरण के लिए उत्तरदाई था। उन्होंने समुद्र में पुनर-भरण कार्यवाहियों का सहज और दक्ष संचालन सुनिश्चित किया जो कई बार लगातार 8 से 12 घन्टों तक चलता रहा।

आद्योपान्त शिव सिंह, मास्टर चीफ पैटी अफसर, प्रथम कोटि ने व्यावसायिक कौशल, पहल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

61. मंडामपिल्ले कश्यप्पन विजयन, मास्टर चीफ पैटी अफसर (ए० सी० एम०), सं० 44971
भारतीय नौसेना (**मरणोपरान्त**)

मंडामपिल्ले कश्यप्पन विजयन, मास्टर चीफ पेटी अफसर अग्रिम बेसों में से एक पर से संक्रिया करने वाले एक पनडुब्बी रोधी और टोह वायुयान के कर्मीदल में थे। 10 दिसम्बर, 1971 को समुद्र में शत्रु थल सेना के ओखा बन्दरगाह पर आक्रमण करने की कोशिश की सूचना मिली। इस सेना द्वारा आक्रमण करने से पहले इसका पता लगाना आवश्यक था। वायुयान जिसके कर्मीदल के मास्टर चीफ पेटी अफसर एम० के० विजयन विशिष्ट सदस्यों में से एक थे, को शत्रु सेना का पता लगाने को भेजा गया। खोज के दौरान, शत्रु को इस वायुयान का पता चल गया। यद्यपि उनके वायुयान के लिए बच निकलने का मौका था, उन्होंने दल के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर अपने मिशन को पूरा करने का निश्चय किया शीघ्र ही शत्रु का जेट वायुयान वहां आ पहुंचा। दोनों वायुयानों की लड़ाई में मास्टर चीफ पेटी अफसर विजयन के वायुयान को मार गिराया।

इस संक्रिया में, मंडामपिल्ले कश्यप्पन विजयन मास्टर चीफ पेटी अफसर ने साहस, दृढ़ संकल्प और कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

62. एस० एल० गुप्ता, मास्टर चीफ इलैक्ट्रिकल आर्टीफिसर (रेडियो), प्रथम कोटि, सं० 47023
भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान एस० एल० गुप्ता मास्टर चीफ इलैक्ट्रिकल आर्टीफिसर (रेडियो) प्रथम कोटि, नौसेना डाकयार्ड बम्बई में कार्यरत थे। उन्हें डाकयार्ड में विभिन्न पोतों के सोनार पेटों तथा गनरी रेडार सेटों के समस्वरण और उनकी खराबियों के सुधार के लिए तैनात किया गया था। उन्होंने सौंपे गए सभी कार्यों को पूरा किया और इस प्रकार पोत की युद्ध क्षमता में सुधार किया। युद्ध की अवधि में वे आदि से अन्त तक डाकयार्ड में उपलब्ध रहे जिसने उनके साथ काम कर रहे कार्मिकों के समक्ष अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया।

आद्योपान्त एस० एल० गुप्ता मास्टर चीफ इलैक्ट्रिकल आर्टीफिसर ने व्यवसायिक कौशल, और कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया।

63. नर बहादुर थापा, मास्टर चीफ पेटी अफसर, प्रथम कोटि, (इंजन कक्ष आर्टीफिसर), सं० 50429
भारतीय नौसेना

नर बहादुर थापा, मास्टर चीफ पैटी अफसर भारतीय नौसेना के एक टास्क फोर्स के पोतों में से एक पर इंजीनियरी ब्रांच के वरिष्ठतम नौसैनिक थे, जिसने 4/5 दिसम्बर, 1971 की रात को कराची से इधर पाकिस्तानी नौसेना की यूनिटों पर आक्रमण किया।

प्रहार करने के पश्चात् जब पोत वापस लौट रहा था उस समय ईंधन दाय के कम होने के कारण अपना गैप टरबाइन में खराबी उत्पन्न हो गई। नर बहादुर थापा ने थोड़ी ही देर में खराबी दूर करदी और अपना गैर टरबाइन को फिर चालू हालत में ला दिया। इस किस्म का काम प्रायः बेस सहायता से केवल बन्दरगाह पर ही किया जाता है।

इस कार्यवाही में नर बहादुर थापा, मास्टर चीफ पेटी अफसर ने व्यावसायिक कौशल, पहल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

64. टी० वी० आर० नम्बयार, मास्टर चीफ पेटी अफसर, द्वितीय कोटि, (एयर हैण्डलर), सं० 61284,
भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध सांक्रियाओं के दौरान टी० वी० आर० नम्बयार मास्टर चीफ पेटी अफसर द्वितीय कोटि भारतीय नौसेना पोत विक्रान्त के उड़ान डेक के कप्तान थे। वायुयानों को समय पर लांच करने और अवतरण के पश्चात् उनको सुरक्षित स्थान पर खड़ा करने का काम सुनिश्चित करते हुए उड़ान डेक पर वायुयानों के कुशल परिचालन के लिए वे उत्तरदाई थे। उन्होंने उड़ान डेक की व्यवस्था इस ढंग से की कि संक्रियाओं में आदि में अन्त तक इतने अति सुचारू ढंग से काम किया। (वायुयान) वाहक की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्होंने अपने सहयोगियों को दिन रात काम करने की प्रेरणा दी। उनके साथियों ने साथ मिल कर काम करने की जिस भावना का प्रदर्शन किया वह पोत पर सभी के लिए एक उदाहरण था।

आद्योपान्त टी० वी० आर० नम्बयार, मास्टर चीफ पेटी अफसर ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

65. अब्दुल हमीद, मास्टर चीफ पेटी अफसर, द्वितीय कोटि, (तारपीडो पनडुब्बी-रोधी इंस्ट्रक्टर), सं० 12402,
भारतीय नौसेना

अब्दुल हमीद, मास्टर चीफ पेटी अफसर द्वितीय कोटि भारतीय नौसेना पोतों में से एक पर थे जो अरब सागर में 9 दिसम्बर को शत्रु पनडुब्बीयों के विरुद्ध हंटर किलर संक्रिया में रत था। वे

सोनार नियंत्रक की ड्यूटी कर रहे थे । शत्रु पनडुब्बियों द्वारा तारपीडो आक्रमण के समय उन्होंने जागरुकता एवं सौम्यता का परिचय दिया । उन्होंने ठीक समय पर तारपीडो के हाइड्रोफोन प्रभाव का पता लगाया । उनके द्वारा प्रदर्शित व्यावसायिक कौशल एवं सूझ-बूझ के कारण ही अनुवर्ती कार्यवाही को टाला जा सका जिससे पोत सुरक्षित रहा और 250 कार्मिकों की जान बच गई । पनडुब्बी पर आगामी आक्रमणों के लिये वे अपने स्थान पर अगले दिन तक रहे ।

इस कार्यवाही में अब्दुल हमीद मास्टर चीफ पेटी अफसर ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

66. स्यामल कुमार सेन, मास्टर चीफ, द्वितीय कोटि,
(इंजन कक्ष आर्टिफिसर, सं० 50831),
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्यामल कुमार सेन, मास्टर चीफ द्वितीय कोटि, इंजन कक्ष आर्टिफिसर, उन पोतों में से एक पर थे जो अरब सागर में पाकिस्तानी नौसेना के विरुद्ध सांक्रियाओं के लिए एक टास्क फोर्स का अंग था । पोत पर वे ही इंजीनियरी ब्रांच के वरिष्ठतम नौसैनिक थे । उनका पोत समुद्र में टास्क फोर्स के अन्य पोतों का पुनर्भरण करने के लिए उत्तरदायी था । उन्होंने पोत की आवश्यकता पूरी करने के लिए दिन रात अनवरत रूप से काम किया । उन्होंने पोत की मुख्य और अनुषंगी मशीनरी का परिचालन इष्टतम क्षमता पर बनाए रखा । उन्होंने अपने विभाग का संगठन कुशल ढंग से किया और इस प्रकार सांक्रिया की सफलता सुनिश्चित की ।

आद्योपान्त स्यामल कुमार सेन, मास्टर चीफ ने व्यावसायिक कौशल, और कर्त्तव्य निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

67. एम० के० खण्डपाल, मास्टर चीफ द्वितीय कोटि
(मैकेनिशियन) सं० 46958
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, एम० के० खण्डपाल, मास्टर चीफ द्वितीय कोटि (मैकेनिशियन) भारतीय नौसेना के एक टास्क फोर्स के पोतों में से एक पर थे जिसे कराची से इधर पाकिस्तानी नौसेना के जंगी जहाजों को बीच में रोकने और ध्वस्त करने का आदेश दिया गया । प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, एम० के० खण्डपाल ने पोत की मशीनरी को सर्वोत्तम स्तर पर चालू रखा । उन्होंने एक बड़ी दरार, जो सांक्रियाओं के दौरान पोत का गति को प्रभारित कर सकती थी, पर काबू पाया : वे अपने अधीन काम करने वाले नौसैनिकों के लिए प्रेरणा के स्रोत रहे ।

आद्योपान्त एम० के० खण्डवाल मास्टर चीफ ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

68. करतार सिंह सलेरिया, मास्टर चीफ पेटी अफसर, द्वितीय कोटि, (एयर हैण्डलर) सं० 35584, वी० एस० एम०
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, करतार सिंह सलेरिया मास्टर चीफ पेटी अफसर (एयर हैण्डलर) भारतीय नौसेना पोत विक्रान्त पर थे जो बंगाल की खाड़ी में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के लिए पूर्वी बेड़े का अंग था । संक्रिया के दौरान वे हैंगर कन्ट्रोल अफसर की ड्यूटी निभा रहे थे । उन्होंने अपने दल का अपूर्व ढंग से संगठन किया । असंख्य पोतारोहित वायुयानों और अविपथगामी उड़ानों के कारण लगे प्रतिबन्ध के बावजूद उन्होंने स्क्वाड्रन की संक्रिया सम्बन्धी सभी आवश्यकताओं को पूरा किया ।

आद्योपान्त करतार सिंह सलेरिया मास्टर चीफ पेटी अफसर ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

69. जे० सिंह मास्टर चीफ (मकेनिशियन) द्वितीय कोटि, नं० 64721
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान जे० सिंह मास्टर चीफ (मैकेनिशियन) द्वितीय कोटि नौसेना डाकयार्ड के वेस अनुरक्षण यूनिट में काम कर रहे थे ।(वे तटीय सेनाओं और स्थानीय रक्षा जलयानों की अनुरक्षण सहायता के इंचार्ज थे । उन्होंने इस विभाग के सुचारु एवं युक्तिपूर्ण ढंग से काम करने की व्यवस्था सुनिश्चित की और इस प्रकार मशीनरी और उपस्करों की बड़ी मरम्मत संतोषजनक ढंग से पूरी की । वे युद्ध में आद्योपान्त डाकयार्ड में ही रहे और समस्त खराबियों को उन्होंने तुरन्त दूर किया ।

आद्योपान्त जे० सिंह मास्टर चीफ ने व्यावसायिक कौशल, पहल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

70. टी० सिंह, मास्टर चीफ मैकेनिशियन (पावर) द्वितीय कोटि, सं० 64843,
भारतीय नौसेना ।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, टी० सिंह, मास्टर चीफ मैकेनियान द्वितीय कोटि नौसेना डाकयार्ड के वेस अनुरक्षण यूनिट में काम कर रहे थे । वे आयुद्ध प्रणाली परीक्षण वर्ग के सदस्य थे और वे तोप टैंकों और उनकी नियंत्रण प्रणाली के परीक्षण एवं समस्याकरण के लिए उत्तरदाई थे । उन्होंने दोषयुक्त उपस्करों की तत्काल मरम्मत की । वे किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए सदैव मौजूद रहते थे, और इस प्रकार पोतों की युद्ध क्षमता उच्चतम स्तर पर बनाए रखने में उनके योगदान को कम नहीं आंका जा सकता ।

आद्योपान्त टी० सिंह मास्टर चीफ मैकेनिशियन ने व्यावसायिक कौशल, पहल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

71. चन्द्रकान्त तिवारी, चीफ पेटी अफसर (गनरी इंस्ट्रक्टर), सं० 44510,
भारतीय नौसेना ।

चन्द्रकान्त तिवारी, चीफ पेटी अफसर (गनरी इंस्ट्रक्टर) भारतीय नौसेना के एक टास्क फोर्स के पोतों में से एक पर थे और इस पोत को 4-5 दिसम्बर, 1971 की रात को कराची से इधर पाकिस्तानी नौसेना यूनिटों पर प्रहार करने और उन्हें नष्ट करने का आदेश दिया गया । पोत शत्रु वायुयानों की मार के भीतर था और उसे सतह और अर्द्ध सतह से भी खतरा था । इनसे तत्क्षण कार्यवाही के लिए "कार्यवाही स्टेशनों" पर पोत कम्पनी को लम्बी

अवधि के लिए बन्द करना अपेक्षित हो गया। उन्होंने आयुद्ध कर्मीदल को काम बन्द रखने और तैयार रहने के लिए आह्वान किया। गन कर्मीदल का मनोबल एक क्षण के लिए भी कम नहीं हुआ। उन्होंने गन कर्मीदल की युद्ध दक्षता, उच्चतम स्तर पर बनाए रखी।

आद्योपान्त चन्द्रकान्त तिवारी चीफ पेटी अफसर ने साहस, व्यवसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

72. जगजीत कुमार, चीफ पेटी अफसर, सं० 45473
भारतीय नौसेना।

जगजीत कुमार, चीफ पेटी अफसर भारतीय नौसेना पोत विक्रांत पर न्यूक्लीयर जैव अन्वेषण एवं क्षति नियंत्रण इंट्रक्टर थे। इंस्ट्रक्टर प्रभारी के रूप में उन्होंने पोत कम्पनी में और पोत की क्षति नियंत्रण टोलियों में क्षति नियंत्रण चेतना का तंत्र फूकने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होंने अपने काम को पूरी लगन और अपनी शक्ति और समय लगाकर पूरा किया और युद्ध में आदि से अन्त तक अपने दल के साथ मिलकर दिन रात काम में जुटे रहे। वे अपने काम करने वाले कनिष्ठ नौसैनिकों के लिए प्रेरणा के स्त्रोत थे।

आद्योपान्त जगजीत कुमार चीफ पेटी अफसर ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

73. बिक्रम सिंह संधू, चीफ इलैक्ट्रीकल आर्टिफिसर ऋपावर)
सं 50916,
भारतीय नौसेना।

बिक्रम सिंह संधू, चीफ इलैक्ट्रीकल आर्टिफिसर (पावर) भारतीय नौसेना के एक टास्क फोर्स के पोतों में से एक पर इलैक्ट्रिकल ब्रांच के वरिष्ठतम नौसैनिक थे और इस पोत को 4/5 दिसम्बर, 1971 की रात को पाकिस्तानी नौसेना के जंगी जहाजों को बीच में रोकने और नष्ट करने का आदेश दिया गया। वे आयुध के प्रभारी थे जिस पर संक्रियाओं की सफलता निर्भर थी। बिक्रम सिंह संधू ने, इसकी सफलता सुनिश्चित करने के लिए, आयुध के प्रत्येक भाग की जांच करने पर काफी समय लगाया। यह उन्हीं के प्रयत्नों का परिणाम था कि शत्रु पोतों को नष्ट करने में आयुध ने पूर्ण सफलता के साथ काम किया।

इस संक्रिया में, बिक्रम सिंह संधू, चीफ इलैक्ट्रिकल आर्टिफिसर ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

74. टी० माइकल, चीफ इंजन रूम आर्टिफिसर, स० 49796
भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध सक्रियाओं के दौरान टी० माइकल, चीफ इंजन रूम आर्टिफिसर नौसेना डाकयार्ड में बेस अनुरक्षण यूनिट में काम कर रहे थे। वे तटीय रक्षा जलयान के लिए अनुरक्षण दल के प्रभारी थे। उन्होंने अपने विभाग का सुचारू ढंग से संगठन किया और उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि उनके जलयान सदैव पूर्णरूप से सांग्रामिक बने रहें।

आद्योपांत टी० माइकल चीफ इंजन रूम आर्टिफिसर ने व्यावसायिक कौशल, पहल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

75. देवी प्रसाद, मैकेनिशियन, तृतीय कोटि, स० 49411,
भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध सक्रियाओं के दौरान, देवी प्रसाद, मैकेनिशियन तृतीय कोटि, भारतीय नौसेना पोतों में से एक पर थे। पोत की मशीनरी के अनुरक्षण का उत्तरदायित्व उन्हीं पर था। सीमित साधनों के साथ, उन्होंने बड़ी-बड़ी मरम्मतें पूरी कीं। उनके अधीन काम करने वाले कनिष्ठ नौसैनिकों को उनसे प्रेरणा मिलती रही। पोत की संक्रियात्मक उपलब्धता में उनके योगदान को कम नहीं आंका जा सकता।

आद्योपांत देवी प्रसाद मैकेनिशियन ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

76. आर० सिंह, मैकेनिशियन तृतीय कोटि, स० 64220,
भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध सक्रियाओं के दौरान, आर० सिंह, मैकेनिशियन तृतीय कोटि दक्षिणी अरब सागर में स्थित पोतों में से एक पोत पर थे। युद्ध के दौरान जब उनका पोत गश्त पर था तभी स० 1 और 2 के मुख्य डीजलों के सुपर चार्जर वायुशीतलक में सुराख होने प्रारंभ होने हो गए। इनकी मरम्मत में सम्पूर्ण व्यवस्था का भंग होना अपेक्षित था। मैकेनिशियन आर० सिंह ने दो रात लगातार कार्य करके शीतलकों की मरम्मत तथा उन्हें पुनः आसजन का काम पूरा किया। उनका यह कार्य सराहनीय था और पोत की उच्च स्तर युद्ध दक्षता को बनाए रखने में उन्होंने प्रत्यक्षतः महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आद्योपान्त आर० सिंह, मैकेनिशियन ने व्यावसायिक कौशल, पहल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

77. पप्पाचन विद्याठिल लोनाप्पन, मैकेनिशियन तृतीय कोटि, स० 65655,
भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध सांक्रियाओं के दौरान, पप्पाचन विद्याठिल लोनाप्पन, मैकेनिशियन, तृतीय कोटि, भारतीय नौसेना के एक पोत पर कार्य कर रहे थे। इंजन कक्ष नौसैनिकों में वरिष्ठतम होने के कारण वह पोत की मशीनरी के उच्च संक्रियात्मक दशा में बनाये रखने के लिए उत्तरदायी थे। अनेक कठिनाइयों के बावजूद, उन्होंने अपने विभाग का संगठन कुशलतापूर्वक किया और यह सुनिश्चित किया कि पोत की मशीनरी और इंजन कक्ष कार्मिक प्रत्येक क्षण युद्ध के लिए तैयार रहें।

आद्योपान्त पप्पाचन विद्याठिल लोनाप्पन मैकेनिशियन ने व्यवसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

78. रणधीर सिंह, मैकेनिशियन तृतीय कोटि, सं० 66233,
भारतीय नौसेना।

रणधीर सिंह, मैकेनिशियन तृतीय कोटि, भारतीय नौसेना के एक टास्क फोर्स के पोतों में से एक पर इंजीनियरी ब्रांच के वरिष्ठतम नौसैनिक थे जिसे 8 व 9 दिसंबर, 1971 की

रात को पाकिस्तानी नौसेना के जंगी जहाजों को कराची से इधर बीच में रोकने तथा नष्ट करने का आदेश दिया गया था। वह इंजन कक्ष की पेचीदा और जटिल मशीनरी के प्रभारी थे। पोत की मशीनरी में युद्ध के दौरान कुछ खराबी आई। उन्होंने कम से कम समय में इन खराबियों को दूर करके पोत को अपने कार्य में लगे रहने के योग्य बनाया। इस कार्यवाही में उनके इस योगदान को कम नहीं आंका जा सकता।

आद्योपान्त रणधीर सिंह मैकेनिशियन ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

79. राम प्रताप सिंह मैकेनिशियन, तृतीय कोटि, सं० 67488,
भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, राम प्रताप सिंह, मैकेनिशियन तृतीय कोटि, बंगाल की खाड़ी में स्थित भारतीय नौसेना के पूर्वी बेड़े के एक पोत पर थे जिसने पाकिस्तानी नौसेना पर आक्रमण किए। एक बार पोत की मुख्य नोदन मशीनरी, पंखा अग्नि नियंत्रक वाल्व के अचानक बन्द होने के कारण खराब हो गई। उन्होंने कम से कम समय में खराबी को दूर करके संक्रिया को सफल बनाने में जो योगदान दिया उसको कम नहीं आंका जा सकता।

आद्योपान्त राम प्रताप सिंह मैकेनिशियन ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

80. केवल कृष्ण गोयल, इलैक्ट्रिकल आर्टिफिसर तृतीय कोटि (राडार) सं० 51198,
भारतीय नौसेना।

केवल कृष्ण गोयल, इलैक्ट्रिकल आर्टिफिसर तृतीय कोटि (राडार) भारतीय नौसेना के एक टास्क फोर्स के पोतों में से एक पर थे जिसे 4/5 दिसम्बर, 1971 की रात को पाकिस्तानी नौसेना के जंगी जहाजों को बीच में रोकने और नष्ट करने का आदेश दिया गया था। उन्होंने इस संक्रिया को सफल बनाने में सराहनीय योगदान दिया। शत्रु द्वारा सतही और हवाई हमलों के सम्मुख भी वह अडिग, विवेकी तथा लक्ष्य को भेदने के लिए अपने स्थान पर डटे रहे।

इस संक्रिया में, केवल कृष्ण गोयल, इलैक्ट्रिकल आर्टिफिसर ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

81. ईश्वर प्रकाश, इंजन रूम आर्टिफिसर तृतीय कोटि, सं० 51096,
भारतीय नौसेना।

ईश्वर प्रकाश, इंजन रूम आर्टिफिसर भारतीय नौसेना के एक टास्क फोर्स के पोतों में से एक पर इंजीनियरी ब्रांच के वरिष्ठतम नौसैनिक थे जिसे 4-5 दिसम्बर, 1971 की रात को पाकिस्तानी नौसेना के जंगी जहाजों को बीच में रोकने तथा नष्ट करने का आदेश दिया गया था। संक्रिया का सफल होना तथा पोत का सुरक्षित वापिस लौटना अधिकतर पोत की जटिल मशीनरी के सुचारू रूप से चालू रहने पर निर्भर था। ईश्वर प्रकाश ने पोत के इंजन और गौण मशीनरी को अच्छी हालत में चालू रखने में विश्वसनीय योगदान दिया। उनकी योग्यता के महत्वपूर्ण योगदान से पोत अपने गन्तव्य स्थल पर पहुंचने तथा उद्देश्य को सफलतापूर्वक पूरा कर सका।

इस संक्रिया में, ईश्वर प्रकाश, इंजन रूम आर्टिफिसर ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

82. सुखदर्शनसिंह, इंजन रूम आर्टिफिसर, तृतीय कोटि, सं० 52566,
भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान सुखदर्शन सिंह, इंजन रूम आर्टिफिसर तृतीय कोटि उन भारतीय पोतों में से एक पर थे जो अरब सागर में पाकिस्तानी नौसेना के विरुद्ध संक्रियाओं में टास्क फोर्स का अंग था। 8 दिसम्बर, 1971 को जब पोत युद्ध में रत था, उनके पोत की पोर्ट गैस टरबाइन में खराबी प्रतीत हुई जिससे पोत की रफ्तार कम होने लगी। सुखदर्शन सिंह, इंजन रूम आर्टिफिसर, ने शैफ्ट को पुनःजोड़ने में देशी तरीका अपनाया और प्रघात ब्लाक की स्नेहन को सुधारा जिससे पोत ने पुनः रफ्तार पकड़ ली। उन्होंने लम्बे समय तक कठिन परिस्थितियों में बिना किसी आराम के लगातार कार्य किया और अपनी व्यक्तिगत आराम की उस समय तक परवाह नहीं की जब तक कि कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण नहीं हो गया।

इस संक्रिया में, सुखदर्शन सिंह, इंजन रूम आर्टिफिसर ने व्यावसायिक कौशल, पहल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

83. पांडुरंग केरु ढोले, पेटी अफसर, सं० 49148,
भारतीय नौसेना।

पांडुरंग केरु ढोले, पेटी अफसर, एक भारतीय नौसेना दल के सदस्य थे, जिसे नौसेना कमाण्डो को जलमग्न विस्फोटकों का प्रशिक्षण देने वाले कैम्प की व्यवस्था करने का काम सौंपा गया था। उन्होंने अपने काम को संकल्प के साथ, खुले में रह कर अपनी व्यक्तिगत सुविधाओं की बिल्कुल उपेक्षा करते हुए, चौबीसों घंटे काम करते हुए, विस्फोटकों का हथालन करते हुए निश्चित कार्यक्रम के अनुसार संक्रिया प्रारंभ करने के साधनों में सुधार करते हुए सम्पन्न किया जिससे उनके दल की सहायता से शत्रु के पोतों को डुबाया, क्षति ग्रस्त किया गया।

आद्योपान्त पांडुरंग केरु, ढोले पेटी अफसर ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

84. अय्याप्पन पिल्लै रवीन्द्रन, पेटी अफसर, तार संकेतक, सं० 49018,
भारतीय नौसेना।

अय्याप्पन पिल्लै रवीन्द्रन, पेटी अफसर, तार संकेतक उन पोतों में से एक पोत पर थे जिसने 8-9 दिसम्बर, 1971 की रात को कराची पर हमला किया। जब यह सैन्य दल कराची की तरफ बढ़ रहा था, पेटी अफसर रवीन्द्रन इलैक्ट्रानिक प्रत्योपाय के एक भाग के रूप में खोज कर रहे थे। उन्होंने कराची को भेजे जा रहे एक समाचार को बीच में रोका जिसमें हमारी सेना के उपस्थित होने का संकेत था। उन्होंने तत्काल इस गुप्त-चर की दिशा का पता लगाया और कमान को सूचित किया।

कुछ देर के पश्चात् जिस दिशा में पेटी अफसर रवीन्द्रन ने सूचित किया था, उसी दिशा में एक शत्रु नौका दिखाई दी। शत्रु नौका पर आक्रमण करके उसे शीघ्र ही डुबो दिया गया। इस हमले के परिणाम स्वरूप, नौका समाचार को भेजने में सफल नहीं हो सकी। यदि इस नौका की सूचना को बीच में रोका न जाता तो शत्रु को पर्याप्त चेतावनी मिल जाती जिससे दल के अनुवर्ती उद्देश्य का पता चल जाता। बाद में शाम को उन्होंने कराची के तट पर स्थित बैटरी से प्रेषित शत्रु तट राडार सम्प्रेषण को बीच में रोका। उन्होंने इस अन्तारोधक को 60 मील के परिक्षेत्र से प्राप्त किया जिसने कमान को यह निश्चय करने के लिए पर्याप्त चेतावनी दी कि कराची बन्दरगाह पर आक्रमण करने के लिए कौन सी सैन्य विन्यास कला अपनाई जाए।

इस संक्रिया में, अध्यापन पिल्लै रवीन्द्रन, पेटी अफसर, तार संकेतक ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

85. जय नारायण शर्मा, पेटी अफसर, शारीरिक प्रशिक्षण अनुदेशक, सं० 86186,
भारतीय नौसेना।

जय नारायण शर्मा, पेटी अफसर, शारीरिक प्रशिक्षण अनुदेशक उस समय भारतीय नौसेना पोत खुकरी पर थे जब उसे अरब सागर में 9 दिसम्बर, 1971 को तारपीडो कर दिया गया था। आदेश मिलने पर, वे पोत को त्याग कर उस प्राण-रक्षी रैफ्ट की ओर तैरने लगे जिसे तब तक पानी में उतार दिया गया था। अपने पोत के साथियों की सहायता करने के के लिए वे शीतल और तैलीय जल में दूर-दूर तक तैरे। तेल के कारण आधे अंधे होने की और भयंकर सर्दी और शारीरिक परिश्रम के कारण थके होने के बावजूद भी वे अपने उन 5 साथियों के प्राण बचाने में सफल हुए जिनमें से दो गंभीर रूप से घायल थे और यहां तक कि वे अपने आप को जीवित रखने में असमर्थ थे।

इस संक्रिया में जय नारायण शर्मा, पेटी अफसर, शारीरिक प्रशिक्षण अनुदेशक ने साहस और दृढ़-संकल्प का प्रदर्शन किया।

86. कंवर पाल सिंह, पेटी अफसर, तार संकेतक, सं० 48729,
भारतीय नौसेना।

कंवर पाल सिंह, पेटी अफसर, तार संकेतक उस समय भारतीय नौसेना पोत खुकरी पर थे जब उसे अरब सागर में 9 दिसम्बर, 1971 को तारपीडो कर दिया गया था। आदेश मिलने पर, उन्होंने पोत को त्याग कर उस प्राण रक्षी रैफ्ट की ओर तैरना आरंभ किया जिसे पानी में उतार दिया गया था। अपने पोत के साथियों की सहायता करने के लिए वे शीतल और तैलीय जल में दूर-दूर तक तैरे। तेल के कारण आधे अंधे होने और भयंकर सर्दी और शारीरिक परिश्रम के कारण थके होने के बावजूद भी अपने 3 साथियों के प्राण बचाने में सफल हुए और सुरक्षा के लिए उनको प्राण रक्षी रैफ्ट में लाये।

इस कार्यवाही में कंवर पाल सिंह, पेटी अफसर, तार संकेतक ने साहस और दृढ़-संकल्प का प्रदर्शन किया।

87. चन्द्र स्वरूप त्यागी, पेटी अफसर (गनरी इंस्ट्रक्टर) सं० 48039,
भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान चन्द्र स्वरूप त्यागी पेटी अफसर (गनरी इन्स्ट्रक्टर) उन पोतों में से एक पर थे जो बंगाल की खाड़ी में पाकिस्तानी नौसेना के विरुद्ध संक्रियाओं के लिए एक टास्क फोर्स का अंग था। जिस समय पोत शत्रु की सीमा के तटों के नजदीक परिचालन कर रहा था, उन्होंने गन कर्मीदल को सतर्क रखा एवं युद्ध तैयारी को उच्चकोटि का बनाए रखा। उन्होंने संकल्प के साथ काम किया और पोत को युद्ध-दक्षता का उच्च मानक बनाए रखने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

आद्योपान्त चन्द्र स्वरूप त्यागी, पेटी अफसर ने व्यावसायिक कौशल, पहल और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

88. स्वतंत्र कुमार, इंजन रूम आर्टिफिसर, चतुर्थ कोटि, सं० 69135,
भारतीय नौसेना।

स्वतंत्र कुमार, इंजन रूम आर्टिफिसर, चतुर्थ कोटि, उन पोतों में से एक पर काम कर रहे थे जिसने 8-9 दिसम्बर, 1971 की रात को कराची पर आक्रमण किया था। संक्रिया की सफलता तथा बाद में पोत का सुरक्षित लौटना किसी सीमा तक, लम्बी अवधि के लिए पोत की लगातार उच्चगति को बनाये रखने पर निर्भर करती थी। पोत की टर्बो-ब्लोअरों, जिनकी क्रिया मुख्य रूप से पोत की गति को नियंत्रित करती थी, पर निरन्तर निगरानी रखनी थी। आर्टिफिसर स्वतंत्र कुमार ने संक्रिया की सम्पूर्ण अवधि के दौरान टर्बो-ब्लोअरों के नीचे स्वयं विद्यमान रहने का काम स्वेच्छा से संभाला। उस स्थान का तापमान जहां वे ठहरे रहे लगभग 180° फा० था फिर भी अपनी सुरक्षा की तनिक परवाह न करते हुए उन्होंने युनिटों की मरम्मत पूरी की और संक्रिया के दौरान आदि से अन्त तक उनको चालू अवस्था में रखा।

इस संक्रिया में स्वतंत्र कुमार, इंजन रूम आर्टिफिसर ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

89. एम० एस० गुप्ता, लीडिंग सीमैन, सं० 64915,
भारतीय नौसेना।

एम० एस० गुप्ता, लीडिंग सीमैन, उस भारतीय नौसेना दल के सदस्य थे, जिसे नौसेना कमाण्डों को जलमग्न विस्फोटकों का प्रशिक्षण देने वाले कैम्प की व्यवस्था करने का काम सौंपा गया था। दल के साथ संपूर्ण सेवा काल के दौरान उन्हें सौंपे गए समस्त कार्यों को उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया। उन्होंने अपने काम को संकल्प के साथ, खुले में रह कर अपनी व्यक्तिगत सुविधाओं की बिल्कुल उपेक्षा करते हुए, चौबीसों घण्टे काम करते हुए, विस्फोटों का हथालन करते हुए और निश्चित कार्यक्रम के अनुसार संक्रिया प्रारंभ करने के साधनों में सुधार करते हुए सम्पन्न किया।

आद्योपान्त एम० एस० गुप्ता, लीडिंग सीमैन ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

90. लाल बहादुर मिश्र, लीडिंग सीमैन, सं० 61782, भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लाल बहादुर मिश्र, लीडिंग सीमैन एक पोत के गोताखोर दल के इंचार्ज थे जिसने अरब सागर में पाकिस्तानी नौसेना के विरुद्ध संक्रियाओं में भाग लिया। पोत को मुख्य खतरा मिजिटों, चैरियटों और जलमग्न तैराकों से था। लाल बहादुर मिश्र के नेतृत्व में पोत के गोताखोर दल ने प्रतिदिन पोत के तल की पूरी तरह से जांच करने का कठिन एवं खतरनाक कार्य सम्पन्न किया।

आद्योपान्त लाल बहादुर मिश्र, लीडिंग सीमैन ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

91. लाल सिंह, लीडिंग सीमैन, सं० 80352, भारतीय नौसेना।

लाल सिंह, लीडिंग सीमैन एक भारतीय नौसेना दल के सदस्य थे जिसे नौसेना कमाण्डों को जलमग्न विस्फोटकों में प्रशिक्षण देने के लिए एक कैम्प की व्यवस्था करने का काम सौंपा गया था। उन्होंने अपना काम संकल्प के साथ खुले में रह कर अपनी व्यक्तिगत सुविधाओं की पूर्णरूप से उपेक्षा करते हुए, दिन रात काम करते हुए, विस्फोटकों का हथालन करते हुए और निश्चित कार्यक्रम के अनुसार संक्रियाओं को प्रारंभ करने के लिए सामग्री में सुधार करते हुए किया और परिणाम-स्वरूप शत्रु पोतों को डुबोने/क्षति पहुंचाने का का काम पूरा किया।

आद्योपान्त लाल सिंह, लीडिंग सीमैन ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

92. महीपाल सिंह, लीडिंग सीमैन, सं० 86514, भारतीय नौसेना।

महीपाल सिंह, लीडिंग सीमैन नौसेना गोताखोर दल के सदस्य थे जिसे पाकिस्तानी पनडुब्बी गाजी का पता लगाने के लिए उस समय तैनात किया गया था जब पनडुब्बी पर विशाखापत्तनम से इधर आक्रमण किया गया था और इसे ध्वस्त कर दिया था। खराब मौसम और क्षेत्र में प्रबल उत्ताल तरंगों के कारण गोता संक्रियाएं जोखिम भरी थीं। गोता कार्यवाही करने से पूर्व गोता जल-यान को डूबी हुई पनडुब्बी से मजबूती से बांधना आवश्यक था। लीडिंग सीमैन महीपाल सिंह ने पनडुब्बी से रस्सा बांधने के लिए स्वेच्छा से अपनी सेवाएं समर्पित कीं। अपने जीवन को खतरा होने के बावजूद, रस्सा बांधने में सफल हुए और केवल इसके पश्चात ही गोता कार्यवाही आरम्भ की जा सकी।

इस कार्यवाही में, महीपाल सिंह, लीडिंग सीमैन ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

93. करण सिंह, लीडिंग सीमैन, सं० 86625, भारतीय नौसेना।

करण सिंह, लीडिंग सीमैन, उस भारतीय नौसेना दल के सदस्य थे जिसे नौसेना कमाण्डों को जलमग्न विस्फोटकों का प्रशिक्षण देने के लिए एक कैम्प का संगठन करने का काम सौंपा गया था। दल के साथ उनके सम्पूर्ण सेवा काल के दौरान उन्हें सौंपे गए समस्त कार्यों को उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया और अपनी व्यक्तिगत सुविधाओं की पूर्ण रूप से उपेक्षा करते हुए, विस्फोटकों का हथालन करते हुए और निश्चित कार्यक्रम के अनुसार संक्रिया आरम्भ करने के साधनों में सुधार करते हुए काम किया।

आद्योपान्त करण सिंह, लीडिंग सीमैन ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

94. सन्त राम, लीडिंग सीमैन, सं० 82060, भारतीय नौसेना।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान सन्त राम, लीडिंग सीमैन, भारतीय नौसेना पोतों में से एक पर काम कर रहे थे जो खुलना पत्तन में संक्रिया करने वाले टास्क फोर्स का एक अंग था। कार्यवाही के दौरान शत्रु तटों की रक्षा हेतु वे व्हील पर थे और ब्रिज से पोत का संचालन भी कर रहे थे। ऐसा करने में वे शत्रु की भारी गोलाबारी के सम्मुख आ गये। इस कार्य-वाही के दौरान वे शत्रु के छोटे हथियारों की गोलीबारी से घायल हो गए थे किन्तु वे संक्रिया समाप्त होने तक अपने कर्त्तव्य का पालन करते रहे।

इस संक्रिया में, सन्त राम, लीडिंग सीमैन ने साहस, संकल्प और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

95. इरामुल्लिल जोसफ प्रिचन, लीडिंग सीमैन, सं० 82811, भारतीय नौसेना।

इरामुल्लिल जोसफ प्रिचन, लीडिंग सीमैन उस भारतीय नौसेना प्रशिक्षण दल के सदस्य थे जिसे नौसेना कमाण्डों को जलमग्न विस्फोटकों का प्रशिक्षण देने वाले एक कैम्प का संगठन करने का काम सौंपा गया था। दल के साथ उनके सम्पूर्ण सेवा काल के दौरान उन्हें सौंपे गए समस्त कार्यों को उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया। उन्होंने अपना काम अपनी व्यक्तिगत सुख सुविधाओं की बिल्कुल परवाह न करते हुए, खुले में रह कर, दिन रात काम करके, विस्फोटकों का हथालन करते हुए और निश्चित कार्यक्रम के अनुसार संक्रिया आरम्भ करने के साधनों में सुधार करते हुए पूरा किया।

आद्योपान्त इरामुल्लिल जोसफ प्रिचन, लीडिंग सीमैन ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

96. अब्बास अली खां, शिपराइट आर्टिफिसर, चतुर्थ कोटि, सं० 51437, भारतीय नौसेना

अब्बास अली खां, शिपराइट आर्टिफिसर, चतुर्थ कोटि उन पोतों में से एक पर थे जो 8/9 दिसम्बर, 1971 को रात को पाकिस्-तानी नौसेना के जंगी जहाजों के विरुद्ध संक्रिया के लिए टास्क फोर्स का अंग था। संक्रिया की सफलता तथा बाद में पोत का सुरक्षित लौटना किसी सीमा तक, लम्बी अवधि के लिए पोत की लगातार उच्चगति को बनाए रखने पर निर्भर करती थी। लगभग 2310 बजे, यह देखा गया कि पोर्ट टर्बो-ब्लोअर की सेहक तेल पाइप लगभग टूटने ही वाली थी, जिससे पोत की गति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता था। शिपराइट खां ने अपेक्षित आयाम की अतिरिक्त ताम्र

पाइप बनाने का काम शुरू कर दिया । उन्होंने अपूर्व उत्साह से काम किया और वे ठीक समय पर एक नई पाइप का निर्माण करने में सफल हुए ।

इस संक्रिया में, अब्बास अली खां, शिपराइट आर्टिफिसर ने पहल, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

97. लक्ष्मी राम प्रशाद, लीडिंग कुक (अफसर), सं० 66441, भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान लक्ष्मी राम प्रशाद, लीडिंग कुक (अफसर) उन भारतीय पोतों में से एक पर थे जो अरब सागर में पाकिस्तानी नौसेना के विरुद्ध संक्रियाओं में एक टास्क फोर्स का अंग था । 4 दिसम्बर, 1971 को उनका पोत एक पनडुब्बी रोधी संक्रिया में लगा था और सम्भावित पनडुब्बी सम्पर्क पकड़े हुए थे । लीडिंग कुक प्रशाद तब लांचर स्थान के बिल्कुल निकट थे । पहलों के दौरान एक लांचर स्थान छिद्र, राकेटों के फटने से खुल गया । वह छिद्र पर पहुंचे और अपने व्यक्तिगत बचाव की परवाह न करके उसे बन्द किया । इससे लांचर स्थान आग लगने से बच गया ।

इस कार्यवाही में, लक्ष्मी राम प्रशाद, लीडिंग कुक ने साहस तथा पहल का परिचय दिया ।

98. रणधीर सिंह यादव, सीमैन, प्रथम कोटि, सं० 83406, भारतीय नौसेना

रणधीर सिंह यादव, सीमैन, प्रथम कोटि, उस भारतीय नौसेना दल के सदस्य थे, जिसे नौसेना कमाण्डों को जलमग्न विस्फोटकों का प्रशिक्षण देने वाले कैम्प की व्यवस्था करने का काम सौंपा गया था । उन्होंने अपना कर्त्तव्य सराहनीय ढंग से निभाया और नौसेना कमाण्डों द्वारा प्राप्त सफलता में उनका बहुत बड़ा हाथ रहा ।

आद्योपान्त रणधीर सिंह यादव, सीमैन ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

99. प्रैरव कुमार भट्टाचार्य, सीमैन, प्रथम कोटि, सं० 88900, भारतीय नौसेना

प्रैरव कुमार भट्टाचार्य, सीमैन प्रथम कोटि उस भारतीय नौसेना दल के सदस्य थे जिसे नौसेना कमाण्डों को जलमग्न विस्फोटकों का प्रशिक्षण देने वाले कैम्प की व्यवस्था करने का काम सौंपा गया था । उन्होंने अपना कर्त्तव्य प्रशंसनीय ढंग से निभाया । कमाण्डों की सफलता का श्रेय बहुत हद तक उन्हीं को है ।

आद्योपान्त प्रैरव कुमार भट्टाचार्य, सीमैन ने साहस, व्यावसायिक कौशल एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

100. इन्द्राज सिंह मीना, सीमैन, प्रथम कोटि, सं० 92675, भारतीय नौसेना

इन्द्राज सिंह मीना, सीमैन, प्रथम कोटि उस भारतीय नौसेना दल के सदस्य थे, जिसे नौसेना कमाण्डों को जलमग्न विस्फोटकों का प्रशिक्षण देने वाले कैम्प की व्यवस्था करने का काम सौंपा गया था । उन्होंने अनेक कठिनाइयों के बावजूद सौंपे गए कार्य को सफलतापूर्वक निभाया और संक्रिया की सफलता में उनके इस योगदान को कम नहीं आंका जा सकता ।

आद्योपान्त इन्द्राज सिंह मीना, सीमैन, ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

101. एस० सी० प्रभाकर, सीमैन, प्रथम कोटि, सं० 84388, भारतीय नौसेना

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, एस० सी० प्रभाकर, सीमैन, प्रथम कोटि, नौसेना प्रभारी, काठियावाड़ के साथ कार्य कर रहे थे । 5 दिसम्बर, 1971 को यह सूचना मिली कि हमारे वायु सेना से एक वायुयान का कर्मीदल पाकिस्तान सीमा में 45 मील भीतर पैराशूट से उतरा । सूचना प्राप्त होते ही तत्काल, एस० सी० प्रभाकर, सीमैन स्वेच्छा से नौका द्वारा शत्रु सीमा में वायु कर्मीदल को ढूंढने गये । 6 दिसम्बर, 1971 को सुबह नौका, निर्देशित स्थान पर पहुंच गई और वहां अनेक मत्स्य नौकाओं में जा मिली । उन्होंने दो गन नौकाओं को गश्त करते तथा दो पाकिस्तानी पोतों को भी देखा । क्षेत्र की एक घंटे तक खोज करने तथा महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त करने के पश्चात् नौका धीमी रफ्तार से दिन दहाड़े वापस आ गई ।

इस संक्रिया में, एस० सी० प्रभाकर, सीमैन, ने साहस, पहल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

पे० ना० कृष्णमणि, राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 27th January 1973

No. 9-Pres./73.—The President has been pleased to determine the following order of precedence of wearing of the various medals and decorations. The President's Secretariat Notification No. 35-Pres./70, dated the 3rd July, 1970, is hereby cancelled.

1. Bharat Ratna.
2. Param Vir Chakra.
3. Ashoka Chakra.
4. Padma Vibhushan
6. Param Vishisht Seva Medal.
7. Maha Vir Chakra.
8. Kirti Chakra.
9. Padma Shri.
10. Sarvottam Jeevan Raksha Padak.
11. Ati Vishisht Seva Medal.
12. Vir Chakra.
13. Shaurya Chakra.
14. The President's Police and Fire Services Medal for gallantry.
15. Sena/Nao Sena/Vayu Sena Medal.
16. Vishisht Seva Medal.
17. The Police Medal for gallantry.
18. Uttam Jeewan Raksha Padak.
19. Wound Medal.
20. The General Service Medal—1947.
21. Samar Seva Star—1965.
22. Poorvi Star.
23. Paschimi Star.
24. Raksha Medal—1965.
25. Sangram Medal.
26. Sainya Seva Medal.
27. Police (Special Duty) Medal—1962.
28. Videsh Seva Medal.
29. The President's Police and Fire Services Medal for distinguished service.

30. The Meritorious Service Medal.
31. The Long Service and Good Conduct Medal.
32. The Police Medal for meritorious service.
33. Jeevan Raksha Padak.
34. The Territorial Army Decoration.
35. The Territorial Army Medal.
36. The Indian Independence Medal—1947.
37. The Independence Medal—1950.
38. 25th Independence Anniversary Medal.
39. 20 Years Long Service Medal.
40. 9 Years Long Service Medal.
41. Commonwelath awards.
42. Other awards.

No. 10-Pres./73.—The President is pleased to approve the award of the "NAO SENA MEDAL"/"NAVY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage during the recent operations against Pakistan :—

1. Captain VITHAL AMRITRAO DHARESHWAR (X)
Indian Navy.

Captain Vithal Amritrao Dhareshwar was the commanding Officer of one of the ships which was deployed in South Arabian Sea during the conflict with Pakistan in December 1971. He maintained a very high degree of fighting efficiency of his ship during the entire period of operatoins. His ship remained at sea throughout the hostilities and effectively investigated all ships at sea for contraband. On all such occasions, he was a source of inspiration to all personnel on board.

Throughout, Captain Vithal Amritrao Dhareshwar displayed courage, professional skill and devotion to duty.

2. Captain INDER MOHAN NARANG,
Merchant Navy.

Captain Inder Mohan Narang was the Master of Vishwa Vijay, a vessel belonging to the Shipping Corporation of India during the India-Pakistan conflict in December, 1971. His ship was requisitioned for carrying troops for the landing operation on UKHAI Beach off COX's Bazar. He commanded the ship, fully aware that he had to traverse through waters infested with enemy submarines. From the reports that two of the enemy sabre jets were still operating, he was also aware that his ship could be subjected to air attack. Notwithstanding these threats, he took the ship to the landing site which was within range of shore gunfire. The make-shift arrangements made by him for accommodating a number of officers and jawans in the ship which was basically meant to carry cargo was highly commendable.

In this action, Captain Inder Mohan Narang displayed courage, leadership and devotion to duty.

3. Commander RAJENDRA PRASAD BHALLA (X),
Indian Navy.

Commander Rajendra Prasad Bhalla joined the Eastern Fleet for directing landing operations when the army was ordered to land on the beaches of COX's Bazar in Bangladesh during the operations against Pakistan in December 1971. He sailed with the troops and arrived at the scene of operation just a few hours before the landings were due. When it was found that the normal method of landing from ship was not possible due to unsuitability of the beach, he swam across at considerable personal risk. He proceeded to Cox's Bazar and after having taken control of that area, he improvised further landings by use of local motorised fishing boats which he commanded. He, thus, enabled a large number of personnel, along with their arms, ammunition and equipment, to land at Cox's Bazar in a short period.

In this action, Commander Rajendra Prasad Bhalla displayed courage, initiative and devotion to duty.

4. Commander CHAVUR GEORGE FRANCIS (X),
Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Commander Chavur George Francis was the Commanding Officer of a Fleet Auxiliary, which took part in the operations in the Bay of Bengal. In a very short time, the ship was required to be converted for its new role of providing logistics support to the Eastern Fleet. Commander Chavur George Francis got the ship ready in record time. The ship under his able command kept the Eastern Fleet supplied with essential commodities like fuel, water and stores continuously in the advance bases and operational areas.

Throughout, Commander Chavur George Francis displayed courage, professional skill, and devotion to duty.

5. Commander JOGENDRA KHANNA (X),
Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December 1971, Commander Jogendra Khanna was the Commanding Officer of one of the ships of the Western Fleet. This ship was ordered to patrol approaches to Bombay and provide logistic support to other units of the Western Fleet. He successfully completed all the talks assigned to him. On one occasion, the ship developed a defect which, if not rectified immediately, would have impaired completion of important task allotted to the ship. He, by his personal example, inspired his men to effect repairs in record time. He also provided a boarding party to board a merchant ship which was found carrying contraband goods for Pakistan. This ship was later escorted to an Indian port.

Throughout, Commander Jogendra Khanna displayed courage, professional skill and devotion to duty.

6. Commander HARI MOHAN LAL SAXENA (X),
Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December 1971, Commander Hari Mohan Lal Saxena, as the Executive Officer of Indian Naval Ship Vikrant, was largely responsible for organising and maintaining a very high standard of fighting efficiency. He was also responsible for ensuring a very high degree of damage control readiness, which was of paramount importance in an aircraft carrier. He completed all the tasks assigned to him creditably.

Throughout, Commander Hari Mohan Lal Saxena displayed courage, professional skill and devotion to duty.

7. Commander RAJENDRA RAI SOOD (E), VSM
Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Commander Rajendra Rai Sood was the Engineer Officer of the Flag ship of the Western Fleet. He ensured the highest state of ship's material efficiency throughout the period of hotilities. He organised his department in a very efficient manner and showed high professional skill and leadership to ensure the success of the operation. His vast experience helped the smaller units of the fleet to improve their material efficiency.

Throughout, Commander Rajendra Rai Sood displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

8. Commander CHANDRA MOHAN VYAS (X)
Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Commander Chandra Mohan Vyas was the Fleet Operations Officer on the staff of the Flag Officer Commanding Eastern Fleet. The responsibility of training the ships of the Eastern Fleet and bringing them to a standard where the different types of ship could act as a co-ordinated unit rested on this officer. He undertook the job most enthusiastically and by dint of hard work and professional competence achieved spectacular results. He worked for long hours for days together and contributed a great deal to the successful conclusion of the operations. He also co-ordinated the work of evacuation of prisoners of wars successfully.

Throughout, Commander Chandra Mohan Vyas displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

9. Commander TRIBHUVAN NARAYAN SINGHAL (X),
Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Commander Tribhuvan Narayan Singhal was in command of one of the Indian Naval Ships and the Senior Officer of a Landing Ship Squadron. Apart from the primary

amphibious role of the ship, his ship was extensively used to provide logistic support to the Eastern Fleet. Large quantities of stores, fuel and personnel carried by the ship enabled the Fleet to operate from advance bases for prolonged periods. He ensured uninterrupted operational availability of the ship and fulfilled all the tasks assigned to his ship with credit.

Throughout, Commander Tribhuvan Narayan Singhal displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

10. Surgeon Commander GNANAMANI PETER CHRISTIAN,
Indian Navy

Surgeon Commander Gnanamani Peter Christian was on board one of the ships, which took part in the operations in the Bay of Bengal during the hostilities with Pakistan in December 1971. Out of the 20 prisoners of war embarked on board, one was seriously ill. Surgeon Commander Christian treated the case at sea. The patient had to be operated upon more than once to remove shrapnels from his chest. He maintained continuous vigil until such time the patient was completely out of danger.

In this case, Surgeon Commander Gnanamani Peter Christian displayed professional skill and devotion to duty.

11. Commander GULAB MOHAN LAL HIRANANDANI (X),
Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Commander Gulab Mohan Lal Hiranandani was the Fleet Operations Officer of the Western Fleet. In this capacity, he was primarily responsible for the organisation and fighting efficiency of the Western Fleet. He carried out numerous duties at odd hours of the day and night during the ever changing tactical situation at sea. His meticulous planning and its execution made a commendable contribution to the success of the Western Fleets operations in the Arabian Sea.

Throughout, Commander Gulab Mohan Lal Hiranandani displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

12. Commander SUKHMAL JAIN (X),
Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Commander Sukhmal Jain was in command of one of the Indian Naval Ships which formed part of a Task Force. From the time of sailing till his return to harbour 13 days later, he was engaged in relentless operations against the enemy. He carried out many anti-submarine attacks. He also actively participated in the blockade of enemy shipping and prevented contrabad gold worth Rupees 60 Lakhs from reaching the enemy. Despite material breakdown in one of the turbines of his ship, he kept his ship in fighting trim.

Throughout, Commander Sukhmal Jain displayed courage, leadership and devotion to duty.

13. Commander TRILOCHAN SINGH KHURANA (X),
Indian Navy

During he operations against Pakistan in December, 1971, Commander Trilochan Singh Khurana was the Fleet Navigating Officer of the Western Fleet. He always ensured the correct disposition and regrouping of forces after each phase of the operations at sea with the frequently changing tactical situation and the Fleet covering wide stretches of the North Arabian Sea. He thus made a commendable contribution to the success of Western Fleet's operations in the Arabian Sea.

Throughout, Commander Trilochan Singh Khurana displayed professional skill and devotion to duty.

14. Commander RANJIT KUMAR CHAUDHURI (X), VSM
Indian Navy

During the hostilities with Pakistan in December, 1971, Commander Ranjit Kumar Chaudhuri was the Commanding Officer of one of the Indian Naval Ships which took part in the operations in the Arabian Sea. He attacked a submarine, carried out a search covering 6,000 square miles for a Pakistan Merchant Ship and participated in an attack on the enemy coast. He boarded a Pakistan Ship off the enemy coast, and escorted another enemy merchantship to Bombay in the face of submarine and air threat. He successfully completed all the tasks assigned to him and thus inspired confidence in all the officers and men under him.

Throughout, Commander Ranjit Kumar Chaudhuri displayed courage, leadership and devotion to duty.

15. Commander HARDEV SINGH (X),
Indian Navy

Commander Hardev Singh was the Commanding Officer of one of the ships which was deployed in South Arabian Sea during the operations against Pakistan in December 1971. He ensured that the fighting efficiency of the ship was at peak readiness and responsive to the changing tactical situations. His ship was deployed in Trade Warfare and patrol duties. On the very first day of the conflict, he captured a Pakistani Merchant Ship. A party from his ship successfully boarded the ship and brought her into Cochin harbour safely. He successfully completed all the tasks assigned to him and thus inspired confidence in all the officers and men under him.

Throughout, Commander Hardev Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

16. Commander UMESH CHANDRA TRIPATHI (X),
Indian Navy

Commander Umesh Chandra Tripathi was in command of one of the Indian Naval Ships which formed part of a Task Force for operations in the Arabian Sea during the hostilities with Pakistan in December 1971. On one occasion, his ship suffered a material breakdown which normally would have required her to return to harbour. He, however, had his ship's defect set right and resumed operations. On another occasion, there was again a major breakdown in his ship. He rapidly brought the situation under control. Within a very short time, he had his ship under tow and brought it safely to Bombay. As soon as repairs were completed, he sailed for anti-submarine operations in the Arabian Sea. He relentlessly carried out these operations till the cease fire was announced. He always ensured maximum operational availability of his ship and fulfilled with credit all the tasks assigned to his ship.

Throughout, Commander Umesh Chandra Tripathi displayed courage, professional skill and devotion to duty.

17. Commander GULAB T. WADHWANI (X),
Indian Navy

Commander Gulab T. Wadhwani was the Executive Officer of a ship which formed part of the Western Fleet during the hostilities with Pakistan in December 1971. In this capacity he was responsible for maintaining a very high standard of fighting efficiency. His personal example inspired the entire ship's company. His experience and wisdom in the evaluation of enemy threats and in finding solutions to counter these threats were commendable.

Throughout, Commander Gulab T. Wadhwani displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

18. Commander SITA PRASAD KAPRAWAN (X),
Indian Navy

Commander Sita Prasad Kaprawan was the Commanding Officer of a Fleet Auxiliary which took part in the operations in the Arabian Sea during the hostilities with Pakistan in December 1971. He successfully completed all the tasks assigned to him and thus inspired confidence in all the officers and men under him. His successful operations off Saurashtra, to meet the difficult logistic requirements of our forces in that area under constant air and submarine threat, proved invaluable to the naval operations.

Throughout, Commander Sita Prasad Kaprawan displayed courage, leadership, professional skill and devotion to duty.

19. Commander RAVEENDRA NATH SINGH (X),
Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Commander Raveendra Nath Singh was the Commanding Officer of one of the ships of the Western Fleet. He successfully

completed all the tasks assigned to him and thus inspired confidence in all officers and men under him. Despite continuous threat of submarine attacks with a ship under two, his alertness and determination enabled him to keep up with the Fleet throughout the operations. He relentlessly investigated merchant ship contacts for contraband control. He captured a Pakistani Merchant Ship and escorted her to Bombay in the face of submarine and air threat.

Throughout, Commander Ravendra Nath Singh displayed courage, leadership and professional skill.

20. Commander MAHENDRA PAL WADHAWAN (X), VSM
Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Commander Mahendra Pal Wadhawan was in command of a Seeking Squadron based at Cochin. These Helicopters, together with most of the aircrew were ordered to shift to an advance Base at a short notice. Commander Wadhawan acted promptly and organised the detachment of aircraft overnight which enabled some of the Helicopters to operate from the forward base the next day. The remaining aircraft arrived shortly thereafter. He maintained high serviceability of his aircraft and thus discouraged the enemy from undertaking any underwater ventures.

Throughout, Commander Mahendra Pal Wadhawan displayed courage, leadership and devotion to duty.

21. Commander VERNON FRANCIS REBELLO (X), Indian Navy

Commander Vernon Francis Rebello was incharge of the landing operations in Bangladesh during the Indo-Pakistan conflict in December, 1971. He was first required to plan embarkation of a large number of personnel and stores on board the ship. It was entirely through his organisational skill, untiring efforts and resourcefulness that embarkation was completed within a few hours. Further, reallocation and resetting of stores for loading in the landing craft, at sea, both by day and night, and subsequent landing of personnel and stores ashore, continued to make heavy demands on Commander Rebello which were much beyond the normal call of duty. The credit for successful conduct of landing operations, to a great extent, goes to Commander Rebello.

Throughout, Commander Vernon Francis Rebello displayed courage, organising ability and devotion to duty.

22. Commander RABINDRA SINGH HUJA (E), Indian Navy

During the hostilities with Pakistan in December 1971, Commander Rabindra Singh Huja was the Engineer Officer of one of the Indian Naval Ships which took part in the operations in the Bay of Bengal. When engaged in an anti-submarine action on the 4th December 1971, serious exhaust gas leakage developed from one of the engines and filled the engine room with smoke and fumes. It was essential to rectify the defect immediately for the success of the operations. Commander Rabindra Singh Huja led his team into the smoke filled engine room and effected emergency repairs. This action contributed towards the success of the operation. Again, on the 15th December 1971, one of the Indian Naval Ships suffered damage while engaged in amphibious landings. A repair team under Commander Rabindra Singh Huja was sent to effect repairs. Working throughout the night in heavily flooded compartments at considerable risk to his life, he carried out temporary repairs which enabled the ship to participate in the landing operation.

In these actions, Commander Rabindra Singh Huja displayed courage, professional skill and devotion to duty.

23. Acting Commander PALLASSARNA PARAMESWARA IYER SIVAMANI (X), Indian Navy

After the surrender of the Pakistan Forces in Bangladesh Commander Pallassarna Parameswara Iyer Sivamani was entrusted with the task of clearing a channel free of mines off Chittagong to enable the port to handle normal shipping traffic. The enemy had laid mines indiscriminately and closed all entrances to the port of Chittagong. Commander Sivamani was one of the Officers under the charge of the 'Flag Officer Commanding Eastern Fleet, entrusted with the job of making this major port of Bangladesh operational without delay. He improvised mine-sweeping gear by making use of the locally available material and used fishing trawlers to sweep the channel. He exposed himself to grave danger of hitting a mine while sweeping the channel with improvised method. His determination and zeal inspired sailors and local crew of the trawler to share the hazard willingly. Again, in order to ensure that the channel swept was fully clear of mines, he used small ships with improvised gear to carry out check sweeps. At the end of the check sweeps, the channel was marked for deep draught ships to enter Chittagong Port.

In this action Commander Pallassarna Parameswara Iyer Sivamani displayed courage, professional skill, initiative and devotion to duty.

24. Lieutenant Commander BHARAT BHUSHAN (E), Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Lieutenant Commander Bharat Bhushan was the Senior Engineer Officer of Indian Naval Ship Vikrant. He kept the ship fully operational throughout the period of hostilities. He met all the demands of both steam catapult and the high speed required for the operation of aircraft in very light wind conditions. It was largely due to his meticulous planning that it was possible to meet all the demands of an aircraft carrier engaged in action against the enemy.

Throughout, Lieutenant Commander Bharat Bhushan displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

25. Lieutenant Commander MAULI BHUSHAN GHOSH (E)
Indian Navy

Lieutenant Commander Mauli Bhushan Ghosh was the Engineer Officer of one of the Ships which attacked Karachi on the night of the 8th/9th December, 1971. The success of the operation and subsequent safe return of the ship depended, to a large extent, on the ship's ability to steam at high speed continuously over a prolonged period. Lieutenant Commander Mauli Bhushan Ghosh kept the ship's machinery going for the entire duration of the operation in the face of the grave dangers which confronted the ship. He organised running repairs to the machinery under his personal supervision and thus inspired confidence in all his men working under him.

Throughout Lieutenant Commander Mauli Bhushan Ghosh displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

26. Lieutenant Commander (Now Commander) NARINDRA NATH ANAND (X),
Indian Navy

Lieutenant Commander Narindra Nath Anand was the Executive Officer of one of the ships which led the fleet units for an attack on Karachi on the night of the 8th/9th December 1971. He was closed up on the bridge of the ship from 1800 hours on 8th December to 0700 hours on the 9th December 1971. During this period, he continuously evaluated the electronic warfare data intercepted by the ship and assisted the command in its judicial use, which contributed significantly to the success of the operation. He kept the entire ship ready for instant action. The officer displayed great devotion to duty in executing the tasks assigned to him with total disregard to his personal safety and thus inspired confidence in all officers and men under him.

Throughout, Lieutenant Commander Narindra Nath Anand displayed courage, professional skill, leadership and devotion to duty.

27. Lieutenant Commander YATISH KUMAR SATIJA (E),
Indian Navy

Lieutenant Commander Yatish Kumar Satija was the Air Engineer Officer of the Indian Naval Ship VIKRANT which played an important role in the operations against Pakistan in the Bay of Bengal in December 1971. He organised maintenance teams in an exemplary manner and ensured that day-to-day unserviceabilities together with battle damage were repaired/rectified with the available resources on board, in the shortest possible time. Throughout the operations, he worked ceaselessly with total disregard to his personal comfort and thus inspired confidence in all men working under him.

Throughout, Lieutenant Commander Yatish Kumar Satija displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

28. Lieutenant Commander SHASHI KANT KULSRESHTA (X),
Indian Navy

Lieutenant Commander Shashi Kant Kulsreshta was the Commanding Officer of one of the ships which was deployed in the Southern Arabian Sea during the hostilities with Pakistan in December, 1971. He ensured that the fighting efficiency of the ship was at its peak and responsive to the changing tactical situations. His ship was deployed off Cochin on trade warfare and patrol duties. Despite many difficulties, the ship spent sustained periods at sea doing continuous high speeds. He successfully completed all the tasks assigned to him and thus inspired confidence in all his officers and men.

Throughout, Lieutenant Commander Shashi Kant Kulsreshta displayed courage, professional skill, leadership and devotion to duty.

29. Lieutenant Commander ASHWANI KUMAR SHARMA (X)
Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December 1971, Lieutenant Commander Ashwani Kumar Sharma was in command of one of the Indian Naval Ships which formed part of a Task Force for operations against the Pakistan Navy in the Bay of Bengal. His ship was deployed for enforcing blockade of Bangladesh and for contraband control. By his alertness, a number of ships and crafts were intercepted and seized. His ship also formed part of the amphibious force employed for landing at COX's Bazar. The ship landed the first wave of troops ashore. The conditions for landing were very difficult and plans had to be altered at the last minute. Lieutenant Commander Ashwani Kumar Sharma executed the task assigned to him with total disregard to his personal safety and thus inspired confidence in all the officers and men under him.

Throughout Lieutenant Commander Ashwani Kumar Sharma displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

30. Lieutenant Commander KANKIPATI APPALA SATYANARANA ZAGAPATHI RAJU (X), Indian Navy

During the hostilities with Pakistan in December, 1971 Lieutenant Commander Kankipati Appala Satyanarana Zagapathi Raju was the Executive Officer of one of the Indian Naval Ships which formed part of the Eastern Fleet for operations against the Pakistan Navy in the Bay of Bengal. On the 15th December, 1971, the Eastern Fleet was directed to land troops near COX's Bazar. His ship was required to provide gun support to the amphibious force. Due to heavy swell and surf, it was not possible to land troops by the landing craft inspite of repeated attempts. Lieutenant Commander Raju under extreme hazardous conditions, with determination and courage landed sufficient troops to establish a beach head with the help of ship's whaler. Though the whaler got swamped and damaged, he changed to another to complete the landing operation. Later, the same afternoon, he successfully managed to connect a towing line from a landing craft to another ship lying 600 yards away. This contributed to floating of the grounded landing craft.

In this action, Lieutenant Commander Kankipati Appala Satyanarayana Zagapathi Raju displayed courage, professional skill, leadership and devotion to duty.

31. Lieutenant Commander UTFULLA DABIR (X)
Indian Navy

During the hostilities with Pakistan in December, 1971, Lieutenant Commander Utfulla Dabir was in command of one of the Indian Naval Ships which formed part of a Task Force for operations in the Bay of Bengal. His ship was deployed for enforcing blockade of Bangladesh ports and for contraband control. By his alertness, a number of ships and craft were intercepted and seized. His ship also formed part of the amphibious force employed for landing of troops at COX's Bazar. Inspite of many difficulties a large number of troops and equipment were ferried ashore in his ship.

Throughout, Lieutenant Commander Utfulla Dabir displayed courage, professional skill, leadership and devotion to duty.

32. Lieutenant Commander JOHN WILLIAM DANIEL (X) Indian Navy

Lieutenant Commander John William Daniel was in command of a yard craft which was utilised for support duties during the operations against Pakistan in December, 1971. This craft played a vital role throughout the period of hostilities. She operated off the Saurashtra coast in support of the forces operating in the area or staging through the area. It virtually became logistic base and played an important part in these operations. His efforts went a long way not only in ensuring support to our units in this area but also in staging offensive operations against the enemy.

Throughout, Lieutenant Commander John William Daniel displayed courage, leadership and devotion to duty.

33. Lieutenant Commander JANARDAN DEO (X) Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971 Lieutenant Commander Janardan Deo was the Executive Officer of one of the ships of a Task Force of the Indian Navy which was ordered to intercept and destroy warship of the Pakistan Navy off Kurachi. During the attack on the night of the 4th/5th December 1971, his ship was not only responsible for her own operation, but was also required to support other vessels in the event of their being attacked. Lieutenant Commander Janardan Deo went into minute details and made an important contribution towards maintaining a very high standard of fighting efficiency, thereby making the operation a complete success. Again, on the 10th December 1971, when his ship was sent to pick up the survivors from Indian Navy Ship Khukri, he organised the rescue operations very efficiently. As there was a danger of a submarine lurking somewhere, it was essential that the ship got underway as soon as possible after picking up the survivors. Under his able leadership the whole operation was completed expeditiously.

In these actions, Lieutenant Commander Janardan Deo displayed courage, leadership and devotion to duty.

34. Lieutenant Commander VISHNU KUMAR RAIZADA (L) Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Lieutenant Commander Vishnu Kumar Raizada was entrusted with the job of conversion and refit of patrol boats. The job involved making alterations and additions to boats to convert them into gun boats in the shortest possible period. He organised his department in an efficient manner and completed the task ahead of schedule. In addition, he provided personal technical assistance during trials of the boats to ensure their speedy utilisation for operations. It was largely due to him that gun boats achieved spectacular success.

Throughout, Lieutenant Commander Vishnu Kumar Raizada displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

35. Lieutenant Commander SURENDRA NATH JHA (E) Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Lieutenant Commander Surendra Nath Jha was the Engineer Officer of one of ships of a Task Force of the Indian Navy operating in the Bay of Bengal. During the amphibious operations off COX's Bazar on the 15th December 1971, one of the Landing Ships ran aground while beaching. Lieutenant Commander Surendra Nath Jha was sent as Officer-in-Charge of a repair team to effect repairs in that ship. Working throughout the night in heavily flooded compartments at considerable risk to his life, he was able to make the ship seaworthy.

In this action, Lieutenant Commander Surendra Nath Jha displayed courage, professional skill, leadership and devotion to duty.

36. Lieutenant Commander SURESH SOOTA (E) Indian Navy

Lieutenant Commander Suresh Soota was the Flight Deck Engineer Officer of Indian Naval Ship Vikrant during the operations against Pakistan in December 1971. He was responsible for launching and recovering aircraft engaged in action against the enemy. He worked day and night to meet the requirements of the ship. On one occasion, when the aft lift got stuck with two aircraft in the air, he displayed great presence of mind by managing to bring the lift up with only six minutes to spare for ditching of the aircraft.

Throughout, Lieutenant Commander Suresh Soota displayed technical skill, leadership and devotion to duty.

37. Lieutenant Commander MANORANJAN SHARMA (X) Indian Navy

Lieutenant Commander Manoranjan Sharma was on board Indian Naval Ship Khukri, when she was torpedoed on the

9th December 1971, whilst carrying out hunter-killer operations against enemy submarines in the Arabian Sea. When ordered, he abandoned the ship in complete darkness. He found himself in the vicinity of some sailors struggling to keep themselves afloat. Unmindful of the danger involved and with complete disregard to his personal safety, he swam long distances through cold and oily waters to help his shipmates. Thus, he helped three sailors to reach the safety of life raft before himself getting into it. Further, he collected 25 personnel in the life raft and kept their morale high by personal example till the arrival of the rescue vessel.

In this action, Lieutenant Commander Manoranjan Sharma displayed gallantry, initiative and leadership.

38. Lieutenant Commander JASBIR SINGH CHEEMA (E) Indian Navy

During the hostilities with Pakistan in December, 1971, Lieutenant Commander Jasbir Singh Cheema was the Engineer Officer of one of the Indian Naval Ships which formed part of a Task Force for operations against the Pakistan Navy in the Arabian Sea. On the 8th December, 1971, during operations at sea, the port gas turbine of the ship failed. It became necessary to lock the port shaft which reduced the ship's speed. Lieutenant Commander Jasbir Singh Cheema took up the challange to effect repairs to the defective machinery. He, with his high professional knowledge and skill, completed repairs in a remarkably short time. He managed to restore enough speed for the ship to continue to remain in the Battle Zone than to return for repairs.

In this action, Lieutenant Commander Jasbir Singh Cheema displayed technical skill, initiative and devotion to duty.

39. Lieutenant PRABHAT KUMAR JINDAL (L) Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Lieutenant Prabhat Kumar Jindal was the Deputy Electrical Officer of one of the ships of a Task Force which was ordered to intercept and destroy warships of the Pakistan Navy off Karachi. He kept the electrical and electronic equipment working at optimum level inspite of adverse conditions. He organised his department in a very efficient manner which ensured the success of the operations. The successful termination of the operations without any breakdown in the electrical and electronic equipments of the ship was largely due to him.

Throughout, Lieutenant Prabhat Kumar Jindal displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

40. Lieutenant SURESH HIRANAND KUNDANMAL (X) Indian Navy *(Posthumous)*

Lieutenant Suresh Hiranand Kundanmal was on board Indian Naval Ship Khukri when she was torpedoed on 9th December, 1971 whilst carrying out hunter killer operations in the Arabian Sea. Although Lieutenant Suresh Hiranand Kundanmal had ample opportunity to abandon the ship, he decided to stay on and supervise the life saving operations. He helped many sailors to abandon the ship. In doing so, he made the supreme sacrifice and went down with the ship.

In this action, Lieutenant Suresh Hiranand Kundanmal displayed courage, leadership and devotion to duty.

41. Lieutenant (Special Duty Bosun) DARSHAN LAL Indian Navy

During the hostilities with Pakistan in December, 1971, Lieutenant Darshan Lal was on board one of the ships which took part in the operations in the Bay of Bengal. On the 11th December, 1971, he was sent as in-charge of a boarding party to board an inland water freighter, which had earlier been attacked with rockets from naval aircraft. On boarding the ship, he found that the ship had been abandoned and the engine room flooded. The seacock inlet pipe was intentionally damaged by the crew before abandoning the ship. The freighter was in danger of sinking. He managed to anchor the ship and also salvaged one boat which was half submerged in water and was hanging from one of the falls.

In this action, Lieutenant Darshan Lal displayed courage, professional skill and devotion to duty.

42. Lieutenant VINOO KRISHNA CHAUDHRY (E) Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Lieutenant Vinod Krishna Chaudhry was the Engineer Officer on board one of the submarines. He organised his department in an efficient manner and carried out major work on the machinery and thus kept it operational through the period of hostilities.

Throughout, Lieutenant Vinod Krishna Chaudhry displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

43. Lieutenant JAYASHEEL VISHWANATH NATU (E) Indian Navy

Lieutenant Jayashele Vishwanath Natu was entrusted with the ojb of conversion and refit of patrol boats. He organised his department in an efficient manner and completed the task well ahead of the schedule. In addition, he provided technical assistance during trails of the boats to ensure speedy utilisation of these boats for operations. He was embarked in one of the gun boats, which was assigned the task of attacking targets in the ports of Mongla and Khullna. Throughout his stay on board, he kept the machinery in working condition inspite of many difficulties.

Throughout the period of operations against Pakistan in December, 1971, Lieutenant Jayasheel Vishwanath Natu displayed courage, professional skill and devotion to duty.

44. Lieutenant VINOD KUMAR JAIN (L) Indian Navy *(Posthumous)*

Lieutenant Vinod Kumar Jain was a keen student of Electronics. He used to devote his entire spare time in devising modifications/improvisations in the existing electronic equipment on board ships in order to improve their capability and efficiency. Whilst pursuing this project, he was embarked on board the Indian Naval Ship Khukri. He was killed in action, when the Ship was torpedoed.

Throughout, Lieutenant Vinod Kumar Jain displayed professional skill and devotion to duty.

45. Lieutenant GEORGE ALBERT DONALD DUKE (X) Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Lieutenant George Albert Donald Duke was the Officer-in-Charge of the Command Clearance Diving Team. This Team formed a vital and integral part of the defence of naval ships and installations in Bombay. He was responsible to ensure that ships and the seaward approaches to naval dockyard were kept free from mines and other explosives. This entailed a sustained operation of searching the ships' hull throughout the period of hostilities. The successful completion of the task was mainly due to Lieutenant Duke, who inspired the men under him to perform their tasks with zeal and dedication.

Throughout, Lieutenant George Albert Donald Duke displayed professional skill and devotion to duty.

46. Lieutenant GURNAM SINGH (E) Indian Navy

Lieutenant Gurnam Singh was the Engineer Officer of one of the front line squadrons embarked on board Indian Naval Ship Vikrant. He devoted his entire time and energy wholeheartedly to his work with the sole aim of maintaining a very high state of aircraft serviceability in the squadron. He, thus, made available the maximum number of aircraft for the operations against Pakistan in December, 1971.

Throughout, Lieutenant Gurnam Singh displayed professional skill and devotion to duty.

47. Lieutenant PHOOL KUMAR PURI (E) Indian Navy

Lieutenant Phool Kumar Puri was the Engineer Officer of one of the ships of a Task Force of the Indian Navy, which was ordered to intercept and destroy warships of the Pakistan Navy off Karachi on the night of the 4th/5th December, 1971. The success of the operation and subsequent safe return of the ship, to a large extent, depended on the efficient running of the complex machinery of the ship. He organised his department in an efficient manner and ensured that there was no break-down in Ship's machinery. The successful termination of the operation was to a great extent due to him.

In this action, Lieutenant Phool Kumar Puri displayed professional skill and devotion to duty.

48. Lieutenant ANTHONY DE SAM LAZARO (X) Indian Navy

Lieutenant Anthony De Sam Lazaro was the Executive Officer of one of the ships of a Task Force of the Indian Navy which was ordered to intercept and destroy warships of the Pakistan Navy off Karachi on the night of the 4th/5th December, 1971. He was responsible for maintaining a very

high standard of fighting efficiency of the ship during this operation. He successfully completed all the tasks assigned to him and thus inspired confidence in all officers and men under him. He thus contributed in no small measure, to the success of the operation.

In this operation, Lieutenant Anthony De Sam Lazaro displayed courage, leadership, professional skill and devotion to duty.

49. Lieutenant (Special Duties Radio) KASHMIRA SINGH, Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Lieutenant Kashmira Singh was on board one of the Indian Naval Ships which formed a part of the Eastern Fleet for operations against Pakistan in the Bay of Bengal. He worked long hours to ensure that all electronic equipments functioned effectively and thus contributed greatly to the operational capability of the Ship.

Throughout, Lieutenant Kashmira Singh displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

50. Lieutenant RAVINDER KUMAR NARAD (E), Indian Navy.

Lieutenant Ravinder Kumar Narad was the Engineer Officer of one of the ships of a Task Force of the Indian Navy which was ordered to intercept and destroy enemy warships off Karachi on the night of the 8th/9th December, 1971. He was responsible for the effective functioning of the engine room complex and other associated machinery. He ensured that the mission of the ship was not jeopardised due to any breakdown or malfunctioning of the machinery and also carried out urgent and vital repairs on more than one occasion during the mission.

In this operation, Lieutenant Ravinder Kumar Narad displayed professional skill and devotion to duty.

51. Lieutenant SUNDER RAJ SAMPATH GOPAL (X), Indian Navy.

Lieutenant Sunder Raj Sampath Gopal was the Executive Officer of one of the ships of a Task Force of the Indian Navy which was ordered to intercept and destroy warships of the Pakistan Navy off Karachi on the night of the 4th/5th December, 1971. He worked up the ship's company into an efficient and close-knit fighting unit. He successfully completed all the taks assigned to him with total disregard to his personal safety and inspired confidence in all officers and men under him. He, thus, contributed in no small measure to the success of the operations.

In this action, Lieutenant Sunder Raj Sampath Gopal displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

52. Lieutenant ARVIND LOCHAN (E), Indian Navy.

Lieutenant Arvind Lochan was serving as Senior Engineer Officer on board one of the ships of the Indian Navy. The ship was operating at sea on 4th December, 1971, when at about 2120 hours, whilst soot-blowing was being carried out on boilers, a superheated steam pipe burst. Lieutenant Arvind Lochan rushed to the spot, and took charge of the situation. He personally opened all the doors and hatches for the leaking steam to escape, in complete disregard to his personal safety and helped the boiler room watchkeepers to escape from the boiler room. Due to the prompt and correct action taken by him, the damage to the machinery of the ship was negligible, and it was able to get underway under her own power.

In this action, Lieutenant Arvind Lochan displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

53. Lieutenant MALEDATH VARGHESE PAUL (L), Indian Navy.

Lieutenant Maledath Varghese Paul was the Electrical Officer of one of the front line squadrons embarked on board Indian Naval Ships VIKRANT. Under his guidance and supervision, many rectifications were carried out on aircraft equipment and installations. By his efficient organisation of the department, the maximum number of aircraft were made available for the operations.

Throughout, Lieutenant Maledath Varghese Paul displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

54. Sub Lieutenant (Now Lieutenant) KAILASHPATI RAMALINGAPPA GIRWALKAR (E), Indian Navy.

Sub Lieutenant Kailashpati Ramalingappa Girwalkar was on board one of the frigates of the Indian Navy which was engaged in hunter-killed operations against Pakistan submarines on the 9th December, 1971. At about 2035 hours, his ship was attacked with torpedoes by an enemy submarine. On detecting the torpedoes, the ship was required to build-up high speed instantaneously and continue steaming for avoiding enemy torpedoes. Sub Lieutenant Girwalkar, although not on duty, rushed to the engine room and after taking all precautions complied with the orders from the bridge without any delay. He, thus, saved the ship and her personnel.

In this action, Sub Lieutenant Kailashpati Ramalingappa Girwalkar displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

55. Sub Lieutenant BHAGWAN SINGH THAKUR (X), Indian Navy.

An amphibious landing by units of the Army and Navy was planned at Cox's Bazar. For the success of the operation, it was necessary to carry out a beach reconnaissance prior to landing.

Sub Lieutenant Bhagwan Singh Thakur carried out the hazardous operation of the reconnaissance of the beach on the night of the 13th/14th December, 1971. The information gained by him and his team under such difficult conditions contributed largely to the success of the operation that followed. During the landing operation, he and his team, with total disregard to their personal safety, saved some members of the landing party from drowning. The officer displayed great devotion to duty in executing the task assigned to him and inspired confidence in the other members of the team.

In this operation, Sub Lieutenant Bhagwan Singh Thakur displayed courage, leadership and devotion to duty.

56. Sub Lieutenant ARUP KUMAR BANDYOPADHYAY (X), Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Sub Lieutenant Arup Kumar Bandhyopadhyay formed part of a team which was given the task of organising and training Naval Commandoes and working-up of the crews of the patrol boats. He spared no efforts to ensure that the taks allotted to him were not only accomplished successfully, but also ahead of scheduled time. During the period from the 8th to 10th December, 1971 he was embarked in a patrol boat, which attacked the ports of Mongla and Khulna.

Throughout, Sub Lieutenant Arup Kumar Bandyopadhyay displayed courage, professional skill and devotion to duty.

57. Sub Lieutenant MADANJIT SINGH AHLUWALIA (X), Indian Navy.

Sub-Lieutenant Madanjit Singh Ahluwalia was keeping watch on the Gun Direction Platform of Indian Naval Ship Khukri when the Ship was torpedoed on the 9th December, 1971 whilst carrying out hunter-killer operations against enemy submarines. He was ordered to abandon the Ship just before she sank. Soon after abandoning the ship, he noted that a ship mate of his was having considerable difficulty in keeping afloat. As there was no life raft in sight, he removed his life jacket and gave it to him thereby saving the latter's life. Subsequently he saves the lives of three more sailors from the ship by helping them on to the life raft.

In this action, Sub Lieutenant Madanjit Singh Ahluwalia displayed courage and determination.

58. Sub Lieutenant SAMIRAKANTI BASU (X), Indian Navy.

Sub Lieutenant Samirakanti Basu was on board Indian Naval Ship Khukri, when she was torpedoed on the 9th December, 1971, whilst carrying out hunter-killer operations against enemy submarines in the Arabian Sea. When ordered, he abandoned the Ship and swam towards a life raft, which had been lowered into the water. Leaving the safety of his life raft, he swam long distance through cold, dark and oily waters to help his ship mates whenever he heard cries of distress from them. Despite being half-blinded by oil and exhausted by intense cold and physical exertion, he succeeded in saving the lives of four of his ship mates.

In this action, Sub Lieutenant Samirakanti Basu displayed courage.

59. Sub Lieutenant (SDME) RAM PRATAP SINGH, Indian Navy.

Sub Lieutenant Ram Pratap Singh was the Engineer Officer of one of the ships which took part in the operations against Pakistan in December, 1971. He brought the ship's machinery to a fully operational state, working ceaselessly, and kept it in top condition throughout the period of hostilities. He organised his department in an efficient manner which enabled the ship to operate throughout without any breakdown. He also worked with courage and determination on board 'Mini Labour', a merchant ship, which was badly damaged with engine room flooded with 5 feet of water. Without any regard to his personal comfort, he repaired the badly damaged ship. It was only by virtue of his outstanding leadership, determination and planning that this job could be completed in record time.

In this action, Sub Lieutenant Ram Pratap Singh displayed courage, initiative and devotion to duty.

60. SHIV SINGH, Master Chief Petty Officer, Class-I, No. 31804,
Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Shiv Singh, Master Chief Petty Officer, Class-I was on board one of the ships which formed part of a Task Force for operations against the Pakistan Navy in the Arabian Sea. He was performing the duties of Chief Boswainmate of the ship. His ship was responsible for replenishing other ships of the Task Force at sea. He ensured smooth and efficient conduct of replenishment operations at sea which at times went on for 8 to 12 hours continuously.

Throughout, Shiv Singh, Master Chief Petty Officer, Class-I displayed professional skill, initiative and devotion to duty.

61. MANDAMPILLY KUSHYAPPAM VIJAYAN, Master Chief Petty Officer (ACM), No. 44971, (*Posthumous*) Indian Navy

Mandampilly Kushyappam Vijayan, Master Chief Petty Officer was a crew of an anti-submarine and reconnaissance aircraft operating from one of the advance bases. On the 10th December, 1971, an enemy surface force was reported at sea attempting to attack Okha harbour. It was essential to locate this force before it could attack. The aircraft of which M. K. Vijayan, Master Chief Petty Officer was one of the important members of the crew, was sent to locate the enemy force. During the search, this aircraft was detected by the enemy. Though his aircraft had a chance to escape, he, together with the other members of the team, decided to complete the mission. Soon the enemy's jet aircraft appeared on the scene. In the battle that ensured, Master Chief Petty Officer Vijayan's aircraft was shot down.

In this action, Mandampilly Kushyappam Vijayan, Master Chief Petty Officer displayed courage, determination and devotion to duty.

62. S. L. GUPTA, Master Chief Electrical Artificer (Radio), Class-I, No. 47023,
Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, S. L. Gupta, Master Chief Electrical Artificer (Radio), Class-I was serving in the Naval Dockyard, Bombay. He was employed on rectification of defects and tuning of sonar sets and gunnery radar sets of various ships in the Dockyard. He completed all the tasks assigned to him and thus improved the fighting efficiency of the ship. He was available in the Dockyard throughout the hostilities which set a good example to all the personnel working with him.

Throughout, S. L. Gupta, Master Chief Electrical Artificer displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

63. NAR BAHADUR THAPA, Master Chief Petty Officer, Class-I, (Engine Room Artificer), No. 50529, Indian Navy.

Nar Bahadur Thapa, Master Chief Petty Officer was the senior-most sailor of Engineering branch on board one of the ships of a Task Force of the Indian Navy which attacked units of the Pakistani Navy off Karachi on the night of the 4th/5th December, 1971.

When the ship was withdrawing after the strike, the starboard gas turbine tripped due to fall in fuel pressure. Nar Bahadur Thapa rectified the defect within a short time and got the starboard gas turbine operational again. A job of this nature is normally undertaken only in harbour with base support.

In this action, Nar Bahadur Thapa, Master Chief Petty Officer displayed professional skill, initiative and devotion to duty.

64. T. V. R. NAMBIAR, Master Chief Petty Officer, Class-II (Air Handler), No. 61284,
Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, T. V. R. Nambiar, Master Chief Petty Officer, Class-II was the Captain of the Flight Deck of the Indian Naval Ship Vikrant. He was responsible for the efficient operations of aircraft on the flight deck ensuring timely launching of aircraft and safe parking after landing. He organised the flight deck in a manner that it functioned extremely efficiently throughout the operations. He inspired his men to work day and night to meet the requirements of the Carrier. The team work displayed by his men was an example to one and all on board.

Throughout, T. V. R. Nambiar, Master Chief Petty Officer displayed professional skill leadership and devotion to duty.

65. ABDUL HAMEED, Master Chief Petty Officer, Class-II (Torpedo Anti-Submarine Instructor), No. 12402,
Indian Navy.

Abdul Hameed, Master Chief Petty Officer, Class-II, was on board one of the Indian Naval Ships which was carrying out hunter-killer operations against enemy submarines on the 9th December, 1971 in the Arabian Sea. He was performing the duties of Sonar Controller. He displayed alertness and coolness while under torpedo attack by the enemy submarine. He detected the hydrophone effect of the torpedoes well in time. The consequent avoiding action which resulted in the safety of the ship and the lives of 250 personnel on board was possible due to the professional skill and presence of mind displayed by the sailor. He remained at his post for subsequent attacks on the submarine till the next day.

In this action, Abdul Hameed, Master Chief Petty Officer displayed professional skill and devotion to duty.

66. SYAMAL KUMAR SEN, Master Chief, Class-II (Engine Room Artificer), No. 50831,
Indian Navy

During the operations against Pakistan in December, 1971, Syamal Kumar Sen, Master Chief, Class-II, Engine Room Artificer, was on board one of the ships which formed part of a Task Force for operations against the Pakistan Navy in the Arabian Sea. He was the senior-most sailor of Engineering branch on board the ship. His ship was responsible for replenishing other ships of the Task Force at sea. He worked ceaselessly day and night to meet the requirement of the ship. He kept the main and auxiliary machinery of the ship operating at optimum efficiency. He organised his department in an efficient manner and thus ensured the success of the operation.

Throughout, Syamal Kumar Sen Master Chief displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

67. M. K. KHANDPAL, Master Chief, Class-II (Mechanician) No. 46958.
Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, M. K. Khandpal, Master Chief, Class-II (Mechanician) was on board one of the ships of a Task Force of the Indian Navy, which was ordered to intercept and destroy warships of the Pakistan Navy off Karachi. M. K. Khandpal kept the machinery of the ship working at optimum level, in spite of adverse conditions. He tackled a major leak, which could have effected the movement of the ship during the operations. He was a source of inspiration to the sailors working under him.

Throughout, M. K. Khandpal, Master Chief displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

68. KARTAR SINGH SALARIA, Master Chief Petty Officer, Class-II (Air Handler), No. 35584, VSM, Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Kartar Singh Salaria, Master Chief Petty Officer (Air Handler) was on board Indian Naval Ship Vikrant which formed a part of the Eastern Fleet for operations against Pakistan in the Bay of Bengal. He was carrying out the duties of Hanger Control Officer during this operation. He organised his team in an exemplary manner. In spite of a large number of aircraft embarked and restrictions imposed due to non-diversionary flying, he met all the operational requirements of the squadrons.

Throughout, Kartar Singh Salaria, Master Chief Petty Officer displayed professional skill and devotion to duty.

69. J. SINGH, Master Chief (Mechanician), Class-II, No. 64721, Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, J. Singh, Master Chief (Mechanician), Class-II was serving in the Naval Dockyard in the Base Maintenance Unit. He was incharge of the maintenance support of the coastal forces and local defence craft. He ensured the smooth and efficient running of this Department and thus satisfactorily completed the major overhauls of machinery and equipment. Throughout the hostilities he stayed in the dockyard and promptly attended to all the defects.

Throughout, J. Singh, Master Chief displayed professional skill, initiative and devotion to duty.

70. T. SINGH, Master Chief Mechanician (Power), Class-II, No. 64843, Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, T. Singh, Master Chief Mechanician, Class-II was serving in the Naval Dockyard in the Base Maintenance Unit. He was a member of the weapon system testing group and was responsible for testing and tuning of gun mountings and their control systems. He effected speedy repairs to the defective equipments. He was always available to meet any situation, and thus contributed in no small measure, towards keeping the fighting efficiency of the ships at a very high level.

Throughout, T. Singh, Master Chief Mechanician displayed professional skill, initiative and devotion to duty.

71. CHANDRA KANT TIWARI, Chief Petty Officer (Gunnery Instructor), No. 44510, Indian Navy.

Chandra Kant Tiwari, Chief Petty Officer (Gunnery Instructor) was on board one of the ships of a Task Force of the Indian Navy which was ordered to strike and destroy Pakistani Naval Units off Karachi on night of the 4th/5th December, 1971. The ship was within range of enemy aircraft and there was surface and sub-surface threat also. This required the ship's company to be closed-up at 'action stations' for a long time ready for instant action. He kept the armament crew closed-up and in a state of readiness. The morale of the gun crew never flagged for a moment. He kept the gun crew at a very high level of fighting efficiency.

Throughout this action, Chandra Kant Tiwari, Chief Petty Officer displayed courage, professional skill and devotion to duty.

72. JAGJIT KUMAR, Chief Petty Officer, No. 45473, Indian Navy.

Jagjit Kumar, Chief Petty Officer was on board Indian Naval Ship Vikrant as Nuclear Biological Chemical and Damage Control Instructor. As an instructor in-Charge, he played an important part in inculcating Damage Control consciousness among the ship's company and against Damage Control parties in the ship. He devoted his time and energy whole-heartedly to his work and along with his team, worked day and night throughout the operations. He was a source of inspiration to junior sailors working under him.

Throughout, Jagjit Kumar, Chief Petty Officer displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

73. BIKRAM SINGH SANDHU, Chief Electrical Artificer (Power), No. 50916, Indian Navy.

Bikram Singh Sandhu, Chief Electrical Artificer (Power) was the seniormost sailor of the Electrical Branch on board one of the ships of a Task Force of the Indian Navy which was ordered to intercept and destroy warships of the Pakistan Navy on the night of the 4th/5th December, 1971. He was incharge of weapons on which depended the success of the operation. Bikram Singh Sandhu, spent long hours on testing each and every part of the weapons to ensure its success. It was as a result of his efforts that the weapons functioned with complete success resulting in destruction of enemy ships.

In this action, Bikram Singh Sandhu, Chief Electrical Artificer displayed professional skill and devotion to duty.

74. T. MICHAEL, Chief Engine Room Artificer, No. 49796, Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, T. Michael, Chief Engine Room Artificer, was serving in the Naval Dockyard in the Base Maintenance Unit. He was incharge of the maintenance team for the coastal defence craft. He organised his Department in an efficient manner and ensured that his craft were fully operational at all times.

Throughout, T. Michael, Chief Engine Room Artificer displayed professional skill, initiative and devotion to duty.

75. DEVI PRASAD, Mechanician, Class-III, No. 49411, Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Devi Prasad, Mechanician, Class-III was on board one of the Indian Naval Ships. He was responsible for the maintenance of the ship's machinery. With limited resources, he carried out major repairs. He was a source of inspiration to junior sailors working under him. The operational availability of the ship was, in no small measure, one to his efforts.

Throughout, Devi Prasad, Mechanician displayed professional skill and devotion to duty.

76. R. SINGH, Mechanician, Class-III, No. 64220, Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, R. Singh, Mechanician, Class-III was on board one of the ships which was deployed in the Southern Arabian Sea. While his ship was on patrol during the hostilities, the super charger air coolers of No. 1 and No. 2 main diesels developed leaks. The repairs involved dismantling of the systems. Mechanician R. Singh worked for two successive nights and completed the task of repairing and refitting the coolers. The sailor's performance was commendable and contributed directly towards maintaining a high standard of fighting efficiency of the ship.

Throughout, R. Singh, Mechanician displayed professional skill, initiative and devotion to duty.

77. PAPPACHAN VIDYATHIL LONAPPAN, Mechanician, Class-III, No. 65655, Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Pappachan Vidyathil Lonappan, Mechanician, Class-III was serving on board an Indian Naval Ship. As the senior most engine room sailor, he was responsible for maintenance of ship's machinery in top operational condition. In spite of many difficulties, he organised his department in an efficient manner and ensured that ship's machinery and engine room personnel were in combat ready condition at all times.

Throughout, Pappachan Vidyathil Lonappan, Mechanician displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

78. RANDHIR SINGH, Mechanician, Class-III, No. 66233, Indian Navy.

Randhir Singh Mechanician, Class-III, was the senior-most sailor of the engineering branch on board one of the ships of a Task Force of the Indian Navy which was ordered to intercept and destroy warships of the Pakistan Navy off Karachi on the night of the 8th/9th December, 1971. He was in-Charge of the engine room complex and intricate machinery of the ship. The ship suffered certain machinery breakdowns during the operation. He rectified the defects in record time and thus enabled the ship to proceed with the mission. The successful termination of the operation was in, no small measure, due to his efforts.

Throughout, Randhir Singh, Mechanician displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

79. RAM PRATAP SINGH, Mechanician, Class-III, No. 67488, Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Ram Pratap Singh, Mechanician, Class-III was on board one

of the ships of the Eastern Fleet which carried out operations against the Pakistan Navy in the Bay of Bengal. On one occasion, there was a sudden breakdown in the main propulsion machinery of the ship due to abrupt failure of the fan fire control valve. He rectified the defect in record time and thus contributed in no small measure, to the success of the operations.

Throughout, (Ram pratap Singh, Mechanician displayed professional skill and devotion to duty.

80. KEWAL KRISHAN GOYAL, Electrical Artificer, Class-III (Radar), No. 51198, Indian Navy.

Kewal Krishan Goyal, Electrical Artificer, Class-III (Radar) was on board one of the ships of a Task Force of the Indian Navy, which was ordered to intercept and destroy warships of the Pakistan Navy on the night of the 4th/5th December, 1971. He made considerable contribution towards the success of the operation. In the face of enemy surface and air attacks, he stayed at his post unflinchingly, discriminating and tracking targets.

In this operation, Kewal Krishan Goyal, Electrical Artificer displayed courage, professional skill and devotion to duty.

81. ISHWAR PRAKASH, Engine Room Artificer, Class-III, No. 51096, Indian Navy.

Ishwar Prakash, Engine Room Artificer was the seniormost sailor of Engineering Branch on board one of the ships of a Task Force of the Indian Navy which was ordered to intercept and destroy warships of the Pakistan Navy on the night of the 4th/5th December, 1971. The success of the operation and subsequent safe return of the ship to a large extent depended on the efficient running of the complex machinery of the ship. Ishwar Prakash ensured the smooth and efficient running of the engines and other ancillary machinery of the ship. His ability in doing so contributed greatly in the ship reaching its destination and the successful completion of the mission.

In this operation, Ishwar Prakash, Engine Room Artificer displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

82. SUKHDARSHAN SINGH, Engine Room Artificer, Class-III, No. 52566, Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Sukhdarshan Singh, Engine Room Artificer, Class-III was on board one of the Indian Naval Ships which formed part of a Task Force for operations against the Pakistan Navy in the Arabian Sea. On the 8th December 1971, while engaged in operations at sea, the port gas turbine of his ship experienced a breakdown thus reducing the ships speed. Sukhdarshan Singh, Engine Room Artificer, devised an indigenous method of decoupling the shaft and improving lubrication of the thrust block and thereby restored the ships speed. He worked continuously without a break over a prolonged period under very difficult conditions with utter disregard to his personal comfort until the job was successfully completed.

In this action, Sukhdarshan Singh, Engine Room Artificer displayed professional skill, initiative and devotion to duty.

83. PANDURANG KERU DHOLE, Petty Officer, No. 49148, Indian Navy.

Pandurang Keru Dhole, Petty Officer, was a member of an Indian Naval Team, entrusted with the task of organising a camp and to impart training in underwater explosives to naval commandoes. He carried out his task with determination and with complete disregard to his personal comfort by living in the open, working round the clock, handling explosives and improvising the means to launch operations according to the exacting schedule, thereby sinking/damaging enemy shipping with the help of the members of his team.

Throughout, Pandurang Keru Dhole, Petty Officer, displayed courage, professional skill and devotion to duty.

84. AYYAPPAN PILLAI RAVINDRAN, Petty Officer Telegraphist, No. 49018, Indian Navy.

Ayyappan Pillai Ravindran, Petty Officer Telegraphist was on board one of the ships, which attacked Karachi on the night of the 8th/9th December, 1971. When the force was proceeding towards Karachi Petty Officer Ravindran was carrying out search as part of Electronic Counter Measures. He intercepted a message being cleared to Karachi giving the presence of our forces. He soon found the direction of this emission and reported to the Command. Shortly thereafter, an enemy boat was sighted in the same direction, as reported by Petty Officer Ravindran. The enemy boat was attacked and sunk immediately. As a result of this attack, the boat was not able to clear the message. Had this report from the boat not been interceped, he enemy would have rectived ample warning of he approach and subsequent intentions of the force. Later, in the evening, the sailor intercepted enemy shore radar transmissions from the coast battery at Karachi. He obtained these interceptions at a range of 60 miles, which gave ample warning to the command to decide on the tactics to be employed for the attack on Karachi Harbour.

In this action, Ayyappan Pillai Ravindran, Petty Officer Telegraphist displayed professional skill and devotion to duty.

85. JAI NARAIN SHARMA, Petty Officer, Physical Training Instructor, No. 86186, Indian Navy.

Jai Narain Sharma Petty Officer, Physical Training Instructor was on board Indian Naval Ship Khukri when she was torpedoed on the 9th December, 1971 in the Arabian Sea. When ordered, he abandoned the ship and swam towards a life raft which had by then been lowered into the water. From the life raft, he swam long distances in cold and oily waters to help his shipmates. Despite being half blinded by oil and exhausted by the intense cold and physical exertion, he succeeded in saving the lives of five of his shipmates out of which two were severely injured and were thus incapable of sustaining themselves.

In this action, Jai Narain Sharma, Petty Officer, Physical Training Instructor, displayed courage and determination.

86. KANWAR PAL SINGH, Petty Officer, Telegraphist, No. 48729, Indian Navy.

Kanwar Pal Singh, Petty Officer Telegraphist was on board Indian Navy Khukri when she was torpedoed on the 9th December, 1971 in the Arabian Sea. When ordered, he abandoned the ship and commenced swimming towards a life raft, which had been lowered into the water. He swam long distances in cold and oily waters to help his shipmates. Despite being half-blinded by oil and exhausted by the intense cold and physical exertion, he succeeded in saving the lives of three of his shipmates and brought them to the life raft for safety.

In this action, Kanwar Pal Singh, Petty Officer Telegraphist, displayed courage and determination.

87. CHANDRA SWARUP TYAGI, Petty Officer (Gunnery Instructor), No. 48039, Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Chandra Swarup Tyagi, Petty Officer (Gunnery Instructor) was on board one of the ships which formed part of a Task Force for operations against the Pakistan Navy in the Bay of Bengal. While the ship was operating of the shores of enemy territory, he kept the guns crew alert and at a high degree of readiness. He worked with great determination and made significant contribution towards maintaining a high standard of fighting efficiency of the ship.

Throughout, Chandra Swarup Tyagi, Petty Officer displayed professional skill, initiative and devotion to duty.

88. SWATANTRA KUMAR, Engine Room Artificer, Class-IV, No. 69135, Indian Navy.

Swatantra Kumar, Engine Room Artificer, Class-IV was serving on board one of the ships which attacked Karachi on the night of the 8th/9th December, 1971. The success of the operation and subsequent safe return of the ship depended, to a large extent, on the ship's ability to steam at high speed continuously for a prolonged period. The turbo-blowers of the ship, whose performance primarily governed the speed of the ship, had therefore to be kept under constant observations. Artificer Swatantra Kumar undertook voluntarily to position himself underneath the turbo-blowers for he entire duration of the operation. The temperature of he place where he had positioned himself was about 180°F. Yet with utter disregard for his safety he carried out repairs to the unis and kept them going throughout the operation.

In this action, Swatantra Kumar, Engine Room Artificer displaytd courage, professional skill and devotion to duty.

89. M. S. GUPTA, Leading Seaman, No. 64915, Indian Navy.

M. S. Gupta, Leading Seaman, was a member of an Indian Naval team, which was entrusted with the task of organising a camp to impart training in underwater explosives to the naval commandoes. He successfully executed all the tasks entrusted to him during the entire period of his service with the team. He carried out his task with determination and with complete disregard to this personal comfort by living in the open, working round the clock, handling explosives and improvising the means to launch operations according to the exacting schedule.

Throughout, M. S. Gupta, Leading Seaman, displayed courage, professional skill and devotion to duty.

90. During the hostilities with Pakistan in December, 1971, Lal Bahadur Misra, Leading Seaman was incharge of the diving team of a ship which took part in the operations against the Pakistan Navy in the Arabian Sea. The main threat to the ship was from underwater attacks by midgets, chariots and underwater swimmers. The ships diving team led by Lal Bahadur Misra carried out the arduous and hazardous task of searching thoroughly the ships bottom every day.

Throughout, Lal Bahadur Misra, Leading Seaman, displayed courage, professional skill and devotion to duty.

91. LAL SINGH, Leading Seaman, No. 80352, Indian Ntvy.

Lal Singh, Leading Seaman was a member of an Indian Naval team, which was entrusted with the task of organising a camp to impart training in underwater explosives to the Naval commandoes. He carried out his task with determination and with complete disregard to his personal comfort by living in the open, working round the clock, handling explosives and improvising the material to launch operations according to the exacting schedule, thereby sinking/damaging enemy ships.

Throughout, Lal Singh, Leading Seaman, displaytd courage, professional skill and devotion to duty.

92. MAHIPAL SINGH, Leading Seaman, No. 86514, Indian Navy

Mahipal Singh, Leading Seaman was a member of the Naval Diving Team, which was detailed to locate the Pakistan submarine Ghazi, after it was attacked and destroyed off Vishakhapatnam. The diving operations were hazardous due to the prevailing rough weather and strong tidal currents in the area. It was essential to secure the diving vessel firmly to the sunken submarine before the diving operations could be undertaken. Leading Seaman Mahipal Singh volunteered to secure a rope to the submarine. Despite the danger to his life, he managtd to secure the rope only after which diving operations could commence.

In this action, Mahipal Singh Leading Seaman, displayed courage, professional skill and devotion to duty.

93. KARAN SINGH, Leading Seaman, No. 86625, Indian Navy.

Karan Singh, Leading Seaman was a member of an Indian Naval Team, which was entrusted with the task of organising a camp to impart training in underwater explosives to the Naval commandoes. He successfully executed all the tasks entrusted to him during the entire period of his service with the team and worked with complete disregard to his personal comfort by living in the open and working round the clock, handling explosives and improvising the means to launch operations according to the exacting schedule.

Throughout, Karan Singh, Leading Seaman, displayed courage, professional skill and devotion to duty.

94. SANT RAM, Leading Seaman, No. 82060, Indian Navy.

During the hostilities with Pakistan in December, 1971, Sant Ram, Leading Seamen was seriving on board one of the Indian Naval Ships which was a part of the Force operating in the Khulna port. During action with the enemy shore defences, he was on the wheel and was steering the ship from the bridge. This involved exposure to enemy fire which was very intense. In the course of the action, he was injured by enemy small-arm fire but he continued to perform his duty till the action was over.

In this action, Sant Ram, Leading Seaman, displayed courage, determination and devotion to duty.

95. ERAMULLIL JOSEPH PRINCHAN, Leading Seaman, No.82811, Indian Navy.

Eramullil Joseph Princhan, Leading Seaman was a member of an Indian Naval Training Team, which was entrusted with the task of organising a camp to impart training in underwater explosives to the naval commandoes. He successfully executed all the tasks entrusted to him during the entire period of his service with the team. He carried out his task with complete disregard to his personal comfort by living in the open, working round the clock, handling explosives and improvising the wherewithal to launch operations according to the exacting schedule.

Throughout, Eramullil Joseph Princhan displayed courage, professional skill and devotion to duty.

96. ABBAS ALI KHAN, Shipwright Artificer, Class IV, No. 51437,
Indian Navy.

Abbas Ali Khan, Shipwright Artificer, Class IV was on board one of the ships which formed part of the Task Force for operations against the warships of the Pakistan Navy on the night of the 8th/9th December, 1971. The success of the operation and subsequent safe return of the ship depended, to a large extent, on the ship's ability to steam at high speeds continuously for a prolonged period. At about 2310 hours, it was noticed that a lubrication oil pipe of the port turbo-blower was about to give way, which would have adversely affected the ship's speed. Shipwright Khan undertook to manufacture spare copper pipe of the requisite dimension. He worked with extreme zeal and was able to fabricate a new pipe in good time.

In this action, Abbas Ail Khan, Shipwright Artificer, displayed initiative, professional skill and devotion to duty.

97. LAXMI RAM PRASHAD, Leading Cook (Officers), No. 66441,
Indian Navy.

During the hostilities with Pakistan in December, 1971, Laxmi Ram Prashad, Leading Cook (Officers) was on board one of the Indian Naval Ships which formed part of a Task Force for operations against the Pakistan Navy in the Arabian Sea. On the 4th December, 1971, his ship was engaged in an anti-submarine operation and was holding on to a probable submarine contact. Leading Cook Prashad was then closed-up in the forward launcher space. During one of the attacks, the launcher space hatch flew open due to the blast of rockets. He rushed to the hatch and, with uttar disregard to his personal safety, held it closed. This saved the launcher space from catching fire.

In this action, Laxmi Ram Prashad, Leading Cook displayed courage and initiative.

98. RANDHIR SINGH YADAV, Seaman,Class-I, No. 83406,
Indian Navy.

Randhir Singh Yadav, Seaman, Class-I was a member of an Indian Naval Team, which was entrusted with the task of organising a camp to impart training in underwater explosives to the Naval Commandoes. He performed his duties in a commendable manner and the success achieved by the Naval Commandoes can, to a large extent, be attributed to him.

Throughout, Randhir Singh Yadav, Seaman, displayed courage, professional skill and devotion to duty.

99. PRAIRAB KUMAR BHATTACHARYA, Seaman, Class-I, No. 88900,
Indian Navy.

Prairab Kumar Bhattacharya, Seaman, Class-I was a member of an Indian Naval Team, which was entrusted with the task of organising a camp and imparting training in underwater explosives to navel commandoes. He performed all his duties in a commendable manner. The success achieved by the navel commandoes can, to a large extent, be attributed to him.

Throughout Prairab Kumar Bhattacharya, Seaman displayed courage, professional skill and devotion to duty.

100. INDRAJ SINGH MINA, Seaman, Class-I, No. 92675, Indian Navy.

Indraj Singh Mina, Seaman, Class-I was a member of an Indian Naval Team, which was entrusted with the task of organising a camp to impart training in underwater explosives to the naval commandoes. In spite of various difficulties, he successfully executed all the task to him, and thus contributed, in no small measure to the success of the operation.

Throughout, Indraj Singh Mina, Seaman, displayed courage, professional skill and devotion to duty.

101. S. C. PRABHAKAR, Seaman, Class-I, No. 84388, Indian Navy.

During the operations against Pakistan in December, 1971, S. C. Prabhakar, Seaman, Class-I, was serving with the Naval Officer-in-Charge, Kathiawar. On the 5th December, 1971, information was received that the crew of one of our Air Force aircraft had bailed out in a position which was about 45 miles inside Pakistan territory. Immediately on receipt of the information, S. C. Prabhakar, Seaman volunteered to proceed by boat inside the enemy territory for locating the air crew. The boat arrived at the given position early in the morning of the 6th December 1971 and intermingled with numerous fishing boats there. The sailor noticed two gun boats on patrol and also noticed two Pakistani ships. After searching the area for about one hour, the boat returned at slow speed in broad day light after collecting valuable information.

In this action, S. C. Prabhakar, Seaman displayed courage, initiative and devotion to duty.

P. N. KRISHNA MANI,
Jt. Secy. to the President

CABINET SECRETARIAT

(Department of Personnel)

New Delhi-1, the 23rd January 1973

CORRIGENDUM

No. 15/2/72-AIS(I).—In the Department of Personnel Notification No. 15/2/72-AIS(I), dated the 3rd June, 1972 published in Part I Section 1 of the Gazette of India of the 3rd June, 1972, in Note 2(ii) below Rule 4 of the Rules to the Indian Administrative Service etc., (Released Emergency Commissioned/Short Service Commissioned Officers) Examination, 1972, the following words may be deleted :—

"of 3 or 5 years as the case may be".

S. HABEEBULLAH, Under Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1973